मुन्तख़ब तहरीरात

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
की कृतियों के उद्धरण)

प्रकाशक
नज़ारत नश्र-व-इशाअत क़ादियान

नाम पुस्तक : मुन्तख़ब तहरीरात
(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की
कृतियों के उद्धरण)
Name of book : Muntakhab Tehrirat
अनुवादक : डॉ सय्यद शहामत अली (साहित्य रत्न)
Translator : Dr Syed Shahamat Ali (Sahitya Ratan)
टाइप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी, मुरब्बी सिलसिला
Type, Setting : Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi silsila
प्रथम संस्करण : (हिन्दी) 1989 ई०
द्वितीय संस्करण : (हिन्दी) 2018 ई०
1st & 2nd Ed. : (Hindi) 1989 & 2018
संख्या, Quantity: 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)

ISBN 1853722251

समर्पण

यह उन अहमदियों को समर्पित है जिन पर इस युग में अत्याचार किए जा रहे हैं और उन्हें शहीद किया जा रहा है केवल इसलिए कि वे अल्लाह तआला की 'तौहीद' (अल्लाह एक है) एवं एकेश्वरवाद के सिद्धान्त से प्रेम रखते और उसका प्रचार करते हैं। यह लोग हज़रत बिलाल[रज़ि॰] के आदर्श के स्मारक हैं।

हज़रत बिलाल[रज़ि॰] (अल्लाह उनसे राज़ी हो) हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम (अल्लाह की आप पर सलामती और कृपा हो) के एक सहाबी (सहचर) थे। इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पश्चात् उन पर घोर अत्याचार किए गए। किन्तु उन अत्याचारों के बावजूद अल्लाह तआला की 'तौहीद' अर्थात् एकेश्वरवाद के सिद्धान्त को छोड़ देने के स्थान पर इस मार्ग में शहीद हो जाना श्रेष्ठ समझते थे।

विषय-सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
1	प्रकाशक की ओर से	1
2	अल्लाह तआला	4
3	अल्लाह तआला के दर्शन	5
4	खुदा का अपने श्रद्धालुओं से व्यवहार	6
5	हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम	10
6	पवित्र क़ुर्आन	19
7	वह्यी और इल्हाम	23
8	हमारी आस्थाएँ	26
9	अहमदिया सम्प्रदाय के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मुक़ाम	29
10	पवित्र सम्प्रदाय की स्थापना और नसीहतें	31
11	जमाअत को नसीहत	35
12	दूसरों के प्रति कुविचार (बदज़न्नी)	36
13	अहमदिया सम्प्रदाय का भविष्य	38
14	अन्तिम विजय	39
15	रूह	39
16	मृत्यु के पश्चात् का जीवन	41

17	विश्व के धर्म	41
18	गुनाह (पाप)	42
19	नजात (मुक्ति)	43
20	जिहाद (ख़ुदा तआला के मार्ग में संघर्ष)	44
21	दुआ (प्रार्थना)	46
22	मानवजाति से सहानुभूति	46
23	फ़रिश्ते (ईशदूत)	47
24	याजूज माजूज और उसकी वास्तविकता	49
25	प्रकाश की ऋतु	49

★ ★ ★

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब (सन् 1835-1908 ई.) ने अल्लाह तआला की ओर से सुधारक होने की घोषणा की और आज इस घोषणा पर 129 वर्ष बीत चुके हैं। आपकी पुस्तकों के उद्धरणों के प्रस्तुत संकलन का प्रकाशन अहमदिया सम्प्रदाय की सद-साला (शताब्दी) जुबिली के प्रोग्रामों का एक हिस्सा है। यह सम्प्रदाय आपके मुसलमान अनुयायियों का वह सम्प्रदाय है जिसको ख़ुदा तआला ने स्वयं क़ायम किया है।

अत्यधिक वैर और विरोध बढ़ जाने के बावजूद यह सम्प्रदाय संसार के विभिन्न क्षेत्रों में तीव्र-गति से उन्नति करता रहा और अब 210 देशों में इसके केन्द्र स्थापित हो चुके हैं और इस्लाम की यह पवित्र ध्वनि अब आगे से आगे बढ़ती चली जा रही है।

अहमदिया सम्प्रदाय के संदेश और उसके महत्व एवं प्रोग्रामों की जानकारी के लिए श्रेष्ठ और सुगम मार्ग यह है कि अहमदिया सम्प्रदाय के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की घोषणाओं को समझने का यत्न किया जाए। एक सत्य, सुनिश्चित एवं न्यायोचित ढंग यह भी है कि एक सत्य का जिज्ञासु उन संदेहों को जो हृदय में उत्पन्न हों, उसी सुधारक की स्वयं अपनी कृतियों के आलोक में दूर करने का प्रयास करे जो इमाम-महदी और मसीह मौऊद होने की घोषणा करता है।

प्रस्तुत संकलन में गद्य-पद्य के कुछ चुने हुए उद्धरण प्रस्तुत किए गए हैं जो मानव-जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। एक पढ़ने वाले से हम आशा रखते हैं कि वह इस संकलन के अध्ययन से

जो एक साधारण सा प्रयास है, आपकी लिखी हुई अस्सी से अधिक पुस्तकों का अध्ययन कर लेगा क्योंकि यह पुस्तकें विस्तृत ज्ञान और प्रकाशदायिनी हैं तथा विभिन्न रूपों में उसकी आध्यात्मिक भावनाओं को उभारने वाली हैं।

इस्लाम में अहमदिया सम्प्रदाय का अस्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय है जिसकी स्थापना सन् 1889 ई. में क़ादियान में हुई। इसके संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने घोषणा की कि वे वही सुधारक हैं जिनके प्रादुर्भाव की प्रतीक्षा विभिन्न धर्मानुयायी भिन्न-भिन्न नामों और रूपों में कर रहे थे। हिन्दू श्री कृष्ण की, ईसाई हज़रत ईसा मसीह की और बौद्ध महात्मा बुद्ध की और मुसलमान इमाम महदी और मसीह मौऊद के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

ईश्वरीय ज्ञान तथा उसी के आदेशानुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने यह एक क्रान्तिकारी रहस्योद्‌घाटन किया कि केवल एक ही ''प्रतिज्ञात विभूति'' (मौऊद शख़्सियत) प्रगट होने वाली थी जो समस्त धर्मों के सुधारक (मौऊद अक़वाम आलम) का प्रतिनिधित्व करेगा। उसके प्रादुर्भाव का उद्देश्य केवल यह था कि समस्त मानव जाति को एक अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर्जातीय धर्म पर एकत्र करे। आप ने इस बात का भी स्पष्टीकरण किया कि वह प्रतिज्ञात सुधारक स्वतन्त्र रूप में प्रकट न होगा अपितु वह इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के अधीन होगा।

आप यह विश्वास रखते थे कि इस्लाम अल्लाह तआला का आख़िरी मज़हब (अन्तिम धर्म) और क़ुर्आन मजीद कामिल शरीअत तथा जीवन का सर्वपक्षीय विधान है। इस लिए आपने घोषणा की कि वह ''प्रतिज्ञात सुधारक'' हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधीन

होगा। आपने यह भी घोषणा की कि आपका युग अन्तर्जातीय धर्म की स्थापना के लिए एक ऐसा स्वर्णिम युग होगा जिसके लिए मनुष्य स्वप्न देख रहा था और बड़ी उत्सुकता के साथ उसका अभिलाषी था।

सन् 1889 ई. में आपका ख़ुदा तआला की तरफ से प्रार्दुभाव हुआ ताकि ईश्वरीय-सम्प्रदाय की नींव रखें जो आपके जन्म और प्रादुर्भाव के उद्देश्यों को पूरा करने वाला हो। अस्तु, आपने 23 मार्च सन् 1889 ई. को पंजाब के एक नगर लुधियाना में उन व्यक्तियों से बैअत ली (अर्थात् उन व्यक्तियों को दीक्षित किया) जो आपकी सभी घोषणाओं पर विश्वास और ईमान रखते थे। इस प्रकार एक सम्प्रदाय की स्थापना की घोषणा की।

इस पुस्तक का अनुवाद आदरणीय सय्यद शहामत अली (साहित्य रत्न) ने किया है और अब आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य, आदरणीय अली हसन एम.ए. और आदरणीय नसीरुल हक़ आचार्य ने प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु में सहयोग किया है अल्लाह तआला इन सब को जज़ा-ए-खैर अता करे।

अत: इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की अनुमति से जन सामान्य के लिए द्वितीय संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत

بسم الله الرحمٰن الرحيم

अल्लाह तआला

''हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है। हमारे जीवन के सर्वश्रेष्ठ आनन्द हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हम ने उसको देखा और प्रत्येक सुन्दरता उसमें पाई। यह दौलत लेने के योग्य है यद्यपि प्राण देने से मिले और यह रत्न ख़रीदने के योग्य है चाहे सम्पूर्ण अस्तित्व खोने से प्राप्त हो। हे महरूमो! (हे वंचित लोगो) इस स्रोत की ओर दौड़ो, कि वह तुम्हारी पिपासा शान्त करेगा। यह ज़िन्दगी का चश्मा (स्रोत) है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ! और किस प्रकार इस ख़ुशख़बरी को दिलों में बिठा दूँ! किस मृदंग से बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा यह ख़ुदा है? ताकि लोग सुन लें और किस औषधि से इलाज करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें? यदि तुम ख़ुदा के हो जाओगे तो निश्चित समझो कि ख़ुद तुम्हारा ही है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 19, कश्ती नूह, पृष्ठ-21,22)

''हे सुनने वालो सुनो! कि ख़ुदा तुम से क्या चाहता है? बस यही कि तुम उसी के हो जाओ। उसके साथ किसी को भी सांझीदार न बनाओ। न आकाश में, न पृथ्वी में। हमारा ख़ुदा वह ख़ुदा है जो अब भी ज़िन्दा है जैसा कि पहले ज़िन्दा था और अब भी वह बोलता है जैसा कि वह पहले बोलता था। वह अब भी सुनता है जैसा कि पहले सुनता था। यह विचार निराधार है कि इस युग में वह सुनता तो है किन्तु बोलता नहीं, अपितु वह सुनता और बोलता भी है। उसकी समस्त शक्तियाँ और विशेषताएँ अनादि और अनश्वर हैं। कोई विशेषता निष्क्रिय नहीं, न कभी होगी। वह वही सर्वथा एक है और उसका कोई साँझीदार नहीं, जिसका कोई बेटा नहीं और जिसकी कोई पत्नी नहीं। वह वही जो अनुपम है

जिसके समान दूसरा कोई नहीं..........जिसकी विशेषताओं की बराबरी करने वाला कोई नहीं और जिसकी कोई शक्ति कम नहीं। वह निकट है बावजूद दूर होने के और दूर है बावजूद निकट होने के......... वह सब से ऊपर है किन्तु नहीं कह सकते कि उसके नीचे कोई और भी है और वह आकाश पर है किन्तु नहीं कह सकते कि पृथ्वी पर नहीं। वह पुंज है सर्वरूपी समस्त विशेषताओं का और मज़हर (प्रारूप) है समस्त वास्तविक प्रशंसाओं का और स्रोत है समस्त खूबियों का और संकलन है समस्त शक्तियों का और स्रोत है समस्त बरकतों का। प्रत्येक वस्तु उसी की ओर लौटने वाली है। वह प्रत्येक देश का स्वामी है। वह हर प्रकार के कमाल से अलंकृत है तथा हर प्रकार के दोष और दुर्बलता से पवित्र है और इस बात में वह विशिष्ट है कि पृथ्वी और आकाश वाले उसकी उपासना करें।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-20, अलवसीयत, पृष्ठ-309-310)

अल्लाह तआला के दर्शन

''जिसको सन्देहों से छुटकारा नहीं उसको अज़ाब से भी छुटकारा नहीं जो व्यक्ति इस जगत में अल्लाह तआला के दर्शन करने से वंचित है वह प्रलय के दिन भी अन्धकार में गिरेगा।

ख़ुदा का कथन है-

مَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى

(بنی اسرائیل۔73)

अर्थात् - ''जो व्यक्ति इस लोक में अन्धा होगा वह परलोक में भी अन्धा होगा'' (बनी इस्राईल : 73)

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-13, किताबुल बरीया पृष्ठ-65)

ख़ुदा का अपने श्रद्धालुओं से व्यवहार

''वास्तव में वह ख़ुदा बड़ा ज़बरदस्त और सर्वशक्तिमान है जिसकी तरफ प्रेम और श्रद्धा से झुकने वाले कदापि नष्ट नहीं किए जाते। शत्रु कहता है कि मैं अपनी योजनाओं से उसको नष्ट कर दूँ, और अहितैषी चाहता है कि मैं उनको कुचल डालू, मगर ख़ुदा कहता है कि हे मूर्ख! क्या तू मेरे साथ लड़ेगा? और मेरे प्यारे को तू नष्ट कर सकेगा? वास्तव में पृथ्वी पर कुछ नहीं हो सकता मगर वही जो आसमान पर पहले हो चुका है। पृथ्वी का कोई हाथ उससे अधिक लम्बा नहीं हो सकता जितना कि वह आसमान पर लम्बा किया गया है अत: अत्याचार की योजनाएँ बनाने वाले सर्वथा मूर्ख हैं जो अपनी घृणास्पद और लज्जास्पद योजनाओं के समय अल्लाह की उस महान् सत्ता को याद नहीं रखते जिसके इरादे के बिना एक पत्ता भी गिर नहीं सकता। अत: वह अपने इरादों में सदैव असफल और लज्जित रहते हैं और उनके कुचक्रों से सत्यवादियों को कोई हानि नहीं पहूँचती अपितु अल्लाह के चमत्कार प्रकट होते हैं तथा मानव समाज में ईश्वर को पहचानने की शक्ति बढ़ती है। वह सर्वशक्तिमान और हर प्रकार से समर्थ अल्लाह यद्यपि इन भौतिक नेत्रों से दिखाई नहीं देता किन्तु अपने अलौकिक चमत्कारों से स्वयं को प्रकट कर देता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-13, भूमिका किताबुल बरीया, पृष्ठ-19-20)

''ख़ुदा आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है अर्थात् प्रत्येक प्रकाश जो ऊँचाई और नीचाई में दिखाई देता है, चाहे आत्माओं में है अथवा शरीरों में चाहे निजी है, अथवा पार्थिव, चाहे वह प्रकट रूप में है अथवा प्रच्छन्न रूप में, चाहे मानसिक है अथवा बाह्य, उसकी कृपा का दान है। यह इस बात की ओर संकेत है कि समस्त ब्रह्माण्ड के उस महान स्रष्टा और पालनहार अल्लाह की अपार बरकत प्रत्येक वस्तु

पर छाई हुई है और कोई भी उस बरकत से वंचित नहीं। वही सभी वदान्यताओं का स्रोत और समस्त प्रकाशों का आदि कारण और समस्त कृपाओं का उद्गम स्थान स्त्रोत है। उसकी महान सत्ता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्थिर रखने वाली है तथा समस्त तुच्छ-महान के लिए शरण ही वही है जिसने प्रत्येक वस्तु को अस्तित्वहीन अन्धकार से बाहर निकाल कर अस्तित्व रूप प्रदान किया। उसके अतिरिक्त कोई ऐसी सत्ता नहीं है जो अपने आप में सुयोग्य और स्वयंभू हो अथवा उससे लाभ न उठाती हो अपितु पृथ्वी और आकाश, मनुष्य और अन्य जीवधारी तथा पत्थर और वृक्ष एवं आत्मा और शरीर सब उसी की अनुग्रह से अस्तित्व में आए हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन-ए-अहमदिया, फुट नोट, 191-192)

हम्दो सना✳ उसी को जो ज़ात-जाविदानी,✳
हमसर✳ नहीं है उसका कोई, न कोई सानी✳
बाक़ी वही हमेशा ग़ैर उसके सब हैं फ़ानी,✳
ग़ैरों से दिल लगाना झूठी है सब कहानी।
सब ग़ैर हैं वही है इक दिल का यार-ए-जानी,✳
दिल में मेरे यही है सुबहाना मॅय्यरानी✳
सब का वही सहारा, रहमत है आशकारा,✳
हमको वही प्यारा, दिलबर वही हमारा।
उस बिन नहीं गुज़ारा, ग़ैर उसके झूठ सारा,
यह रोज़कर मुबारक, सुबहान मॅय्यरानी।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, महमूद की आमीन, पृष्ठ-319)

✳हम्दो सना = सब प्रकार की प्रशंसाएँ। ✳ज़ात जावेदानी = सदैव रहने वाली सत्ता। ✳हमसर = समान। ✳सानी = दूसरा। ✳फ़ानी = नाशवान। ✳यार-ए-जानी = हार्दिक दुश्मन। ✳सुबहान मॅय्यरानी = वह सत्ता पवित्र है जिसने मुझ पर यह कृपा दृष्टि की। ✳रहमत है आशकारा = उसकी कृपा स्पष्ट है।

''मैं सच-सच कहता हूँ कि यदि आत्माओं में सच्ची खोज पैदा हो और दिलों में सच्ची प्यास लग जाए तो लोग इस मार्ग को ढूँढें और इस मार्ग की तलाश करें। किन्तु यह मार्ग किस प्रकार खुलेगा और यह पर्दा किस दवा से उठेगा? मैं समस्त जिज्ञासुओं को विश्वास दिलाता हूँ कि केवल इस्लाम ही है जो इस मार्ग की शुभ सूचना देता है। दूसरी कौमें तो ख़ुदा के इल्हाम (ईशवाणी) पर लम्बे समय से ही मुहर लगा चुकी हैं। अत: निसन्देह समझो कि यह अल्लाह की ओर से मुहर नहीं बल्कि वंचित रहने के कारण मनुष्य एक बहाना बना लेता है और निश्चयपूर्वक यह समझो कि जिस प्रकार यह सम्भव नहीं कि हम बिना नेत्रों के देख सकें या बिना कानों के सुन सकें या बिना जीभ के बोल सकें, उसी प्रकार यह भी सम्भव नहीं कि बिना क़ुर्आन के उस प्यारे महबूब (परम प्रिय ख़ुदा) के दर्शन कर सकें। मैं जवान था, अब बूढ़ा हुआ, लेकिन मैंने कोई न पाया जिसने इस पवित्र स्रोत के बिना इस खुले-खुले ब्रह्मज्ञान का अमृतपान किया हो।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-10, इस्लामी उसूल की फिलासफी पृष्ठ-442-43)

(1) किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दउल अनवार✴ का
बन रहा है सारा आलम✴ आईना अबसार✴ का।
(2) चाँद को कल देख कर मैं सख़्त बेकल हो गया,
क्योंकि कुछ कुछ था निशां उसमें जमाले यार✴ का।
(3) उस बहारे हुस्न✴ का दिल में हमारे जोश है,
मत करो कुछ ज़िक्र हम से तुर्क या तातार का।
(4) है अजब जलवा तेरी क़ुदरत का प्यारे हर तरफ,

✴मब्दउल अनवार = ज्योति का स्रोत। ✴आलम = ब्रह्माण्ड। ✴आईना अबसार का = आँखों का दर्पण। ✴जमाले यार = प्रेमी का सौन्दर्य। ✴बहारे हुस्न = हुस्न की बहार।

जिस तरफ़ देखें, वही रह है तेरे दीदार✶ का।
(5) चशमए ख़ुर्शीद[7] में मौजें[8] तेरी मशहूद✶ हैं,
हर सितारे में तमाशा है तेरी चमकार का।
(6) तूने ख़ुद रूहों पे अपने हाथ से छिड़का नमक,
इससे है शोरे मोहब्बत आशिक़ाने ज़ार✶ का।
(7) क्या अजब तूने हर इक ज़र्रे में रखे हैं ख़वास,✶
कौन पढ़ सकता है सारा दफ़्तर उन असरार✶ का।
(8) तेरी क़ुदरत का कोई भी इन्तिहा पाता नहीं,
किस से खुल सकता है पेंच इस उक़दए दुश्वार✶ का।
(9) खूबरूयों✶ में मलाहत✶ है तेरे उस हुस्न की,
हर गुलो गुलशन में है रंग उस तेरी गुलज़ार का।
(10) चश्म मस्ते हर हसीं हर दम दिखाती है तुझे,
हाथ है तेरी तरफ हर गेसुए ख़मदार✶ का।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-2, पृष्ठ-52, सुर्मा चष्म आर्या, पृष्ठ-4)

''तौहीद एक नूर है जो बाह्य एवं आन्तरिक (भौतिक) उपास्यों की समाप्ती के पश्चात् हृदय में पैदा होता है और भक्त के अस्तित्व के रोम-रोम में समा जाता है। अस्तु, वह बिना ख़ुदा और उसके रसूल के द्वारा मनुष्य अपनी शक्ति से किस प्रकार प्राप्त कर सकता है? मनुष्य का केवल यह कार्य है कि अपने अहं पर मृत्यु लावे एवं राक्षसीय घमण्डों को त्याग दे कि मैं महाज्ञानी और बड़ा विद्वान हूँ और अपने आप को एक अज्ञानी की तरह समझ ले और दुआ में लगा रहे। तब तौहीद का नूर ख़ुदा की तरफ

✶दीदार = दर्शन। ✶चश्मये खुर्शीद = सूर्य कि किरणें। ✶मौजें = लहरें। ✶मशहूद = दिखाई देता है। ✶आशिकाने ज़ार = प्रेम में दिवाने। ✶ख़वास = विशेषताएँ। ✶असरार = रहस्य। ✶उक़दए दुश्वार = कठिन समस्या। ✶खूबरूओं = सुन्दर चेहरे वाले। ✶मलाहत = सलोनापन। ✶गेसुए ख़मदार = टेढ़ी जुल्फें।

से उस पर प्रकट होगा और एक नया जीवन उसे प्रदान करेगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-22, हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ-148)

''वह ख़ुदा अत्यन्त वफ़ादार ख़ुदा है। वफ़ादारी के लिए उसके विचित्र कार्य प्रकट होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको खा जाए और प्रत्येक शत्रु उन पर दांत पीसता है। किन्तु वह जो उनका मित्र है, प्रत्येक खतरे के स्थान पर उनकी रक्षा करता है तथा प्रत्येक क्षेत्र में उनको विजयी करता है। क्या ही सौभाग्यशाली वह व्यक्ति है जो उस ख़ुदा से अपना सम्बन्ध न तोड़े।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-19, कश्ती-ए-नूह, पृष्ठ- 20)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम

''वह सर्वश्रेष्ठ प्रकाश जो मानव को दिया गया- अर्थात् पूर्ण मानव (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को, वह फरिश्तों में नहीं था, सितारों में नहीं था, चन्द्रमा में नहीं था, सूर्य में भी नहीं था, वह पृथ्वी पर फैले हुए समुद्रों और नदियों में भी नहीं था, वह मरकत-मणि, नीलम -मणि, रत्न अथवा किसी माणिक मोती में भी नहीं था अर्थात् पृथ्वी और आकाश की किसी वस्तु में नहीं था। केवल मानव में था। हाँ, उस पूर्ण मानव में जिसका अन्तिम और सम्पूर्ण और सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोच्च रूप समस्त मानव-समाज के स्वामी तथा समस्त पैग़म्बरों के सरदार हमारे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। सो वह प्रकाश उस महापुरुष को दिया गया तथा योग्यतानुसार उसके अनुरूप उन सभी लोगों को भी दिया गया जो किसी सीमा तक वही रंग रखते थे। ....और यह शान श्रेष्ठतम एवं पूर्ण रूप में हमारे स्वामी,

हमारे उम्मी पथ-प्रदर्शक नबी, सत्यव्रती एवं सत्य की कसौटी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में पाई जाती थीं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-5, आईना कमालात-ए-इस्लाम, पृष्ठ 160-162)

''मैं सदैव आश्चर्य से देखता हूँ कि यह अरबी 'नबी' जिसका नाम मुहम्मद है, (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह कैसा सर्वोच्च स्तर का नबी है, इसके महान स्तर की चरम-सीमा की जानकारी सम्भव नहीं और इसके पावन प्रभाव का अनुमान करना मनुष्य का कार्य नहीं। खेद है कि पहचानने का जो ढंग है (उसके अनुसार) उसके स्थान को पहचाना नहीं गया। वह 'तौहीद' (अल्लाह तआला के अद्वैत एवं निराकार होने का सिद्धान्त) जो संसार से लुप्त हो चुकी थी, वही एक पहलवान है जो पुन: उसको दुनिया में लाया। उसने अल्लाह से चरम-सीमा तक प्रेम किया और चरम-सीमा तक मानव जाति की सहानुभूति में उसका हृदय द्रवित हुआ, अत: अल्लाह ने जो उसके हृदय के रहस्यों को जानता था- उसको समस्त पैग़म्बरों और सभी भूत-भविष्यकालीन मानवों पर श्रेष्ठता प्रदान की और उसकी मनोकामनाओं को उसके जीवन में ही पूरा किया।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-22, हक़ीक़तुल वही, पृष्ठ 118-119)

''हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त नबियों के नाम अपने अन्दर एकत्र रखते हैं क्योंकि वह पावन विभूती विभिन्न विशेषताओं और योग्यताओं का समूह है। अत: वह मूसा भी हैं और ईसा भी, आदम भी हैं और इब्राहीम भी, यूसुफ भी हैं और याक़ूब भी। इसी की ओर संकेत करते हुए अल्लाह फ़र्माता है-

فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِه (अनआम - 91)

अर्थात हे अल्लाह के रसूल! तू उन समस्त विभिन्न शिक्षाओं को अपने व्यक्तित्व में एकत्र कर ले जो प्रत्येक पैग़म्बर विशेष रूप में अपने

साथ रखता था। अस्तु, इस से सिद्ध है कि समस्त पैग़म्बरों की विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में एकत्र थीं और यथार्थ में मुहम्मद का नाम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) इसी की ओर संकेत करता है क्योंकि मुहम्मद के यह अर्थ हैं कि जिस की अत्यधिक प्रशंसा की गई हो। अत्यधिक प्रशंसा तभी कल्पित की जा सकती है कि समस्त नबियों की विभिन्न सामर्थ्य और विशिष्ट विशेषताएँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में एकत्र हों।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-5, आईना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, पृष्ठ-343)

''मुझे समझाया गया है कि सब रसूलों में से कामिल तालीम (पूर्ण शिक्षा) देने वाले और श्रेष्ठतम एवं पवित्र और सारगर्भित (पुर हिकमत) शिक्षा देने वाले और सर्वोच्च मानवीय योग्यताओं का अपने जीवन में क्रियात्मक आदर्श उपस्थित करने वाले हमारे स्वामी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-17, अरबईन न.-1, पृष्ठ-345)

''हम जब न्याय की दृष्टि से देखते हैं तो सम्पूर्ण नबियों में से श्रेष्ठतम वीर-शिरोमणि नबी (अवतार) और जीवन की सम्पूर्ण श्रेष्ठताओं से अलंकृत ख़ुदा तआला का परम प्रिय नबी केवल एक मर्द को जानते हैं अर्थात् वही नबियों का सरदार रसूलों का गर्व, पैग़म्बरों का सिरमौर जिसका नाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, सिराज-ए-मुनीर पृष्ठ-82)

''वह जो अरब के मरूस्थलीय देश में एक आश्चर्य जनक घटना हुई कि लाखों मुर्दे थोड़े ही दिनों में जीवित हो गए और पीढ़ियों के बिगड़े ईलाही-रंग पकड़ गए तथा आँखों के अन्धे सुजाखे हो गए, मूकों की वाणी से ईश्वरीय तत्व-ज्ञान की चर्चा होने लगी और संसार में देखते ही

देखते एक ऐसी क्रान्ति उत्पन्न हुई कि न पहले उस से किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी। कुछ जानते हो वह क्या था? वह एक अल्लाह में लीन और उसी में खोए हुए की अंधेरी रातों की दुआएँ ही थीं, जिन्होंने दुनिया में शोर मचा दिया और वह आश्चर्यजनक कार्य किए जो उस निरक्षर (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) असहाय और साधनहीन व्यक्ति से असम्भव दिखाई देते थे:-

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ بِعَدَدِهَمِّهٖ وَغَمِّهٖ وَحُزْنِهٖ
لِهٰذِهِ الْاُمَّةِ وَاَنْزِلْ عَلَيْهِ اَنْوَارَ رَحْمَتِكَ اِلَى الْاَبَدِ

अर्थात् हे मेरे अल्लाह! हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके समस्त अनुयायियों पर रहमत और सलामती और बरकत नाज़िल फ़र्मा जिस ने इस उम्मत मुस्लिमा (इस्लाम) के लिए कष्ट उठाए और यातनाएँ सहीं और आप पर अपनी रहमत की वर्षा सदैव बरसा। तथास्तु। ''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-6, बरकातुदुआ पृष्ठ-10,11)

''समस्त मानव जाति के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त अब कोई रसूल और 'शफ़ी (अर्थात सिफ़ारिश करने वाला) नहीं। सो तुम कोशिश करो कि सच्चा प्यार उस महान प्रतापी नबी के साथ रखो और किसी को उस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम मुक्ति प्राप्त करने वाले लिखे जाओ। याद रखो कि मुक्ति वह वस्तु नहीं जो मृत्यु के पश्चात् प्रकट होगी, अपितु वास्तविक मुक्ति वह होगी, जो इसी जगत में अपनी ज्योति दिखाती है। मुक्ति प्राप्त कौन है वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा सच है और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसमें और सम्पूर्ण सृष्टि के मध्य में ''शफ़ी'' (सिफ़ारिश करने वाला) हैं और आसमान

के नीचे उसके समान स्तर का कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के समकक्ष कोई अन्य पुस्तक है और किसी के लिए ख़ुदा ने न चाहा कि वह हमेशा जीवित रहे किन्तु यह सुप्रतिष्ठित नबी हमेशा के लिए जीवित है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-19, कश्ती-ए-नूह, पृष्ठ 13-14)

''हज़रत ख़ातमुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन के अध्ययन से यह बात पूर्ण रूप से सुस्पष्ट है कि आँ हज़रत उच्चकोटि निश्छल एवं सत्यवादी थे। आपकी भावनाएँ शुद्ध और अन्तरात्मा पवित्र थी और ख़ुदा के मार्ग में आत्म बलिदान के लिए सदैव तत्पर रहते थे तथा मानव जाति से भय और आशा से नितान्त मुंह फेरने वाले और एक मात्र ख़ुदा पर भरोसा करने वाले थे। आपने ख़ुदा की इच्छा और उसकी मर्ज़ी में लीन होकर और अपने अस्तित्व को मिटा कर इस बात की कुछ भी परवाह न की कि 'तौहीद' (ईश्वर के एक और निराकार होने का सिद्धान्त) की घोषणा करने के परिणाम स्वरूप किन किन विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा और मुश्रिकों (इश्वरेतर देवी देवताओं और सृष्टि की पूजा करने वालों) के हाथ से कैसी कैसी पीड़ा और कष्ट झेलने होंगे।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया, पृष्ठ-111)

''क्या यह आश्चर्य-जनक घटना नहीं कि एक निर्धन अशक्त, निस्सहाय-निरूपाय, निरक्षर, अनाथ अकेला और निरीह व्यक्ति ऐसे युग में कि जिसमें प्रत्येक जाति आर्थिक सैनिक और बौद्धिक (शिक्षा सम्बन्धी) दृष्टि से पूर्ण शक्तिशाली थी-ऐसी अनुपम शिक्षा लाया कि अपने अकाट्य तर्कों ओर ज्वलन्त प्रमाणों से सब को निरुत्तर करके उनका मुंह बन्द कर दिया। बड़े बड़े लोगों की जो धुरन्धर विद्वान और दार्शनिक कहलाते थे। महान त्रुटियाँ निकालीं और फिर बावजूद निस्सहाय निरूपाय के जोर भी

ऐसा दिखाया कि सम्राटों को सिंहासनों से गिरा दिया और उन्हीं सिंहासनों पर निर्धनों को बिठाया। यदि यह ख़ुदा तआला का समर्थन और उसकी सहायता नहीं थी तो और क्या थीं? क्या समस्त संसार पर बुद्धि, विद्या और शक्ति कि दृष्टि से आधिपत्य पा जाना बिना ईश्वरीय सहायता के हुआ करता है?

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया पृष्ठ-119)

''इसी प्रकार हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रताप और तेज और महत्व को स्वीकार करके 'ज़बूर' पैंतालीस में यूँ वर्णन किया है:-

(1) तू सौन्दर्य में लोगों से कहीं अधिक है। तेरे होठों में मोहक आकर्षण है। इसीलिए ख़ुदा ने तुझ को सृष्टि के अन्त तक मुबारक किया।

(2) हे वीर शिरोमणि! अपने तेज और प्रताप से अपनी तलवार अपनी जांघ पर बाँध कर लटका।

(3) सत्यता, दीनता एवं न्याय पर अपनी प्रतिष्ठा और गौरव से सवार हो क्योंकि तेरा दाहिना हाथ तुझे उत्तेजनापूर्ण कार्य दिखलाएगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-2, सुरमा चश्म आर्य, पृष्ठ 333-334)

''विचार करना चाहिए कि किस धैर्य के साथ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने 'दावा-ए-नबुव्वत' (नबी होने की घोषणा) पर बावजूद सहस्त्रों खतरे खड़े हो जाने और वैमनस्य रखने वालों और बाधाएँ उत्पन्न करने वालों और भय दिलाने वालों के आदि से अन्त तक दृढ़तापूर्वक स्थिर रहे। वर्षों तक वह विपत्तियाँ देखीं और वह दु:ख उठाने पड़े जो सफलता के प्रति पूर्णतया निराश करते थे और (वे दु:ख) प्रति दिन बढ़ते जाते थे जिन पर धैर्य रखने से किसी सांसारिक उद्देश्य की प्राप्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

अपितु नबुव्वत की घोषणा करने से अपने हाथ से अपने पहले समाज को भी खो बैठे और एक बात कह कर लाख विरोध खरीद लिया और हज़ारों विपत्तियों को अपने सर पर बुला लिया। गाँव से निकाले गए, कत्ल के लिए, पीछा किया गया। घर और गृहस्थी सभी कुछ नष्ट हो गया। कई बार विष दिया गया- जो हितैषी थे, वह दुश्मन बन गए। जो मित्र थे वह शत्रुता करने लगे ओर दीर्घकाल तक वह कटुताएँ सहन करनी पड़ीं कि जिन पर दृढ़तापूर्वक ठहरे रहना धोखेबाज़ और मक्कार का काम नहीं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन-ए-अहमदिया, पृष्ठ-108)

मुस्तफा पर तेरा बेहद हो सलाम और रहमत,
उस से यह नूर लिया बार-ए-ख़ुदाया हमने।
रब्त✷ है जान-ए-मुहम्मद से मेरी जाँ को मुदाम,✷
दिल को वह जाम लबालब है पिलाया हमने।
उस से बेहतर नज़र आया न कोई आलम में,
ला जरम✷ ग़ैरों से दिल अपना छुड़ाया हमने।
शान-ए-हक तेरे शमायल✷ में नज़र आती है,
तेरे पाने से ही उस ज़ात को पाया हमने।
छूके दामन तेरा हर दाम से मिलती है नजात,
ला जरम दर पे तेरे सर को झुकाया हमने।
दिल बरा! मुझको क़सम है तेरी यकताई✷ की,
आप को तेरी मोहब्बत में भुलाया हमने।
बख़ुदा दिल से मिट गए सब ग़ैरों के नक्श,
जब से दिल में यह तेरा नक्श जमाया हमने।

✷रब्त - सम्बन्ध। ✷मुदाम - सदैव। ✷लाजरम -निस्सन्देह। ✷शमायल - आदतें, स्वभाव। ✷यकताई - तौहीद एकईश्वरवाद।

हम हुए ख़ैर-ए-उमम✷ तुझ से ही ऐ ख़ैर-ए-रूसूल,✷
तेरे बढ़ने से कदम आगे बढ़ाया हमने।
आदमी ज़ाद तो क्या चीज़ फ़रिश्ते भी तमाम,
मदह✷ में तेरी वह गाते हैं जो गाया हमने।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-5, आईना-कमालात-ए-इस्लाम, पृष्ठ-225,226)

''और मेरे लिए इस नेमत (वदान्यता) का पाना सम्भव न था यदि मैं अपने स्वामी जिन पर समस्त नबी गर्व करते हैं और जो संसार के सम्पूर्ण लोगों से श्रेष्ठ हैं अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मार्गों का अनुसरण न करता। अत: मैंने जो कुछ पाया, उस अनुसरण से ही पाया है। मैं अपने सच्चे और पूर्ण ज्ञान से जानता हूँ कि कोई व्यक्ति बिना पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने के ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकता तथा न पूर्ण रूप से ख़ुदा की पहचान ही कर सकता है। इस जगह मैं यह भी बतलाता हूँ कि वह क्या वस्तु है कि सच्चा और पूर्ण अनुसरण हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद सब बातों से पहले हृदय में पैदा होती है? सो याद रहे कि वह 'पवित्र-हृदय' है अर्थात् हृदय से संसार का प्यार और उसका मोह निकल जाता है। तब हृदय एक सदा रहने वाले और एक अनश्वर आनन्द का अभिलाषी हो जाता है। तत्पश्चात एक स्वच्छ और पूर्ण ईश्वरप्रेम इस पवित्र हृदय को प्राप्त होता है यह सब नेमतें (वदान्यताएँ) आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने से पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिलती है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-22, हकीक़तुल वह्यी पृष्ठ-64,65)

✷ख़ैर-ए-उमम - उम्मतों में श्रेष्ठ। ✷ख़ैर-ए- रसुल - रसूलों में श्रेष्ठ। ✷मदह - प्रशंसा।

वह पेशवा हमारा जिस से है नूर सारा,
नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है।
सब पाक हैं पयम्बर, इक दूसरे से बेहतर,
लेक अज़ ख़ुदाए बर तर खैरुल्वरा* यही है।
पहलों से ख़ूबतर है, खूबी में इक क़मर* है
उस पर हर इक नज़र है, बदरुदुजा* यही है।
पहले तो रह में हारे, पार उसने हैं उतारे,
मैं जाऊँ उसके बारे बस नाख़ुदा यही है।
वह यारे ला मकानी,* वह दिलबरे निहानी,*
देखा है हमने उस से बस रहनुमा यही है।
वह आज शाहे दीं है, वह ताज मुर्सलीं* है,
वह तय्यबो अमीं* है उसकी सना* यही है।
आँख उसकी दूरबीं है, दिल यार से करीं* है,
हाथों में शमए दीं है, ऐनुज़्ज़िया* यही है।
जो राज़ दीं थे भारे, उसने बताए सारे,
दौलत का देने वाला फ़रमाँरवा यही है।
उस नूर पर फ़िदा हूँ, उस का ही मैं हुआ हूँ,
वह है मैं चीज़ क्या हूँ, बस फ़ैसला यही है।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-20, क़ादियान के आर्य और हम, पृष्ठ-456)

---

*ख़ैरूलवरा - सृष्टि में श्रेष्ठ। *क़मर - चाँद। *बदरुददुजा - अन्धेरे का चाँद। *यारे ला मकानी - ला मकान महबूब। *दिलबरे निहानी - दिल का महबूब। *ताज मुर्सलीं - रसूलों का ताज। *तय्यबो अमीं - पवित्र, अमानतदार। *सना - प्रशंसा। *क़रीं - निकट। *ऐनुज़्ज़िया - ज्योति का चश्मा।

पवित्र क़ुर्आन

''पवित्र क़ुर्आन माणिक मोतियों की थैली है और लोग इस से अपरिचित हैं।''
(मल्फ़ूज़ात भाग-2 पृष्ठ-344)

''क़ुर्आन का वह महान गौरव है कि प्रत्येक गौरव से ऊँचा है। वह 'हकम' है अर्थात् फैसला करने वाला है। वह 'मोहैमिन' है अर्थात् समस्त निर्देशों एवं पथ-प्रदर्शनों का संग्रह है। उसने समस्त तर्क एकत्र कर दिए और शत्रुओं के समूह को तितर-बितर कर दिया। वह ऐसी पुस्तक है कि जिस में प्रत्येक वस्तु का विवरण है और उसमें भूत और भविष्य की सूचनाएँ विद्यमान हैं और झूठ को उसकी तरफ कोई मार्ग नहीं, न आगे से, न पीछे से। वह ख़ुदा तआला का प्रकाश है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-16, ख़ुत्बा इल्हामिया, पृष्ठ-103)

''ज्ञात होना चाहिए कि खुला-खुला चमत्कार पवित्र क़ुर्आन का जो प्रत्येक जाति और भाषा-भाषी पर प्रकट हो सकता है जिसको उपस्थित करके हम प्रत्येक देश के मनुष्य को चाहे वह भारतीय हो या पारसी, यूरोपीय हो या अमरीकन या किसी अन्य देश का हो- अभियुक्त, मौन तथा निरुत्तर कर सकते हैं। पवित्र क़ुर्आन के वह असीम गूढ़ अर्थ और तत्व और कभी न समाप्त होने वाले भाव हैं जो प्रत्येक युग में उस युग की आवश्यकता के अनुसार खुलते जाते हैं और प्रत्येक युग की विचारधारा का मुक़ाबला करने के लिए सशस्त्र सैनिकों की भांति खड़े हैं। यदि पवित्र क़ुर्आन अपने गूढ़ अर्थों और भावों की दृष्टि से एक सीमित चीज़ होती तो कदापि वह पूर्ण चमत्कार नहीं ठहर सकती थी।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला औहाम भाग-1, पृष्ठ-255)

''पवित्र क़ुर्आन एक ऐसा चमत्कार है कि न वह प्रथम उदाहरण हुआ न अन्तिक कभी होगा। उसकी वदान्यताओं और बरकतों का द्वार

सदैव खुला और जारी है। वह प्रत्येक युग में उसी प्रकार स्पष्ट और उद्दीप्त है जैसा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वक्त था। इस के अतिरिक्त यह भी याद रखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का कलाम उसकी हिम्मत के अनुसार होता है। जितनी उसकी हिम्मत और संकल्प और महान उद्देश्य होंगे उसी कोटि का वह कलाम होगा। वह्यी-ए-इलाही (ईश-वार्ता) में भी वही रंग होगा, जिस व्यक्ति की तरफ उसकी 'वह्यी' (ईश-वार्ता) आती है। जितना साहस ऊँचा रखने वाला वह होगा उसी कोटि का कलाम उसे मिलेगा। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हिम्मत, सामर्थ्य और संकल्प का क्षेत्र चूँकि अत्यधिक विस्तृत था इसलिए आपको जो कलाम मिला वह भी उस स्तर और उस कोटि का है कि दूसरा कोई व्यक्ति उस हिम्मत और साहस का पैदा न होगा।''

(मल्फ़ूज़ात भाग-3, पृष्ठ-57)

''हम सच-सच कहते हैं और सच-सच कहने से किसी हालत में रुक नहीं सकते कि यदि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए न होते और पवित्र क़ुर्आन, जिसके प्रभाव हमारे धार्मिक नेता-गण और इमाम प्राचीन काल से देखते आए और आज हम देख रहे हैं, नाज़िल न हुआ होता तो हमारे लिए यह विषय बहुत ही कठिन होता कि हम मात्र बाईबल के देखने से निश्चित रूप से पहचान कर सकते कि हज़रत मूसा और हज़रत मसीह और अन्य विगत नबी-पैग़म्बर वास्तव में उसी पवित्र और पावन जमाअत में से हैं जिनको ख़ुदा ने अपनी विशेष कृपा से अपनी 'रिसालत' (सन्देश) के लिए चुन लिया है। यह हमको क़ुर्आन मजीद का एहसान (उपकार) मानना चाहिए जिसने अपना प्रकाश स्वयं दिखलाया और फिर उस पूर्ण प्रकाश से विगत नबियों की सच्चाइयाँ

भी हम पर प्रकट कर दीं। यह उपकार न केवल हम पर अपितु आदम से लेकर मसीह तक उन समस्त नबियों पर है जो पवित्र क़ुर्आन से पहले गुज़र चुके हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1 बराहीन-ए-अहमदिया हाशिया दर हाशिया, पृष्ठ 290)

"आज समस्त भूमण्डल पर समस्त इल्हामी पुस्तकों में से एक क़ुर्आन मजीद ही है कि जिसका कलाम-ए-इलाही होना अकाट्य तर्कों से सिद्ध है, जिसके मुक्ति के सिद्धान्त सर्वथा सत्य और प्राकृतिक कसौटी पर आधारित हैं, जिसके सिद्धान्त ऐसे व्यापक और ठोस हैं, जिनकी सच्चाई पर अखण्डनीय तर्क मुखरित-साक्षी हैं, जिसके आदेश नितान्त सच्चाई पर आधारित हैं, जिसकी शिक्षाएँ प्रत्येक प्रकार की शिर्क बिदअत (रूढ़िवादी विचारधारा से सम्बन्धित रस्मों रिवाज) और सृष्टिपूजा के मिश्रण से पूर्णता रहित हैं, जिसमें 'तौहीद' ईश्वर की प्रतिष्ठा एवं उसके चमत्कार प्रकट करने के लिए, चरम सीमा तक जोश है, जिसमें यह विशेषता है कि नितान्त अल्लाह तआला की वहदानियत (एकेश्वरवाद का सिद्धान्त) से भरा हुआ है और किसी प्रकार की न्यूनता का दोष एवं अयोग्यता का कलंक अल्लाह तआला की पवित्र सत्ता पर नहीं लगाता और किसी आस्था को बलात् स्वीकार नहीं कराना चाहता अपितु जो शिक्षा देता है उसकी सच्चाई के कारण पहले दिखला लेता है और प्रत्येक भाव और उद्देश्य को ठोस तर्कों से सिद्ध करता है और प्रत्येक सिद्धान्त की वास्तविकता पर स्पष्ट तर्क उपस्थित करके पूर्ण विश्वास और पूर्ण पहचान के स्थान तक पहुँचाता है और जो ख़राबियाँ (विकार) और अपवित्रताएँ और बाधाएँ और झगड़े लोगों की आस्थाओं, कर्मों, कथनों और क्रियाओं में पड़े हुए हैं उन समस्त झगड़ों को ज्वलन्त प्रमाणों से दूर करता है। वह सर्व प्रकार के शिष्टाचार सिखाता है कि जिनका जानना मनुष्य को

मनुष्य बनने के लिए अत्यावश्यक है और प्रत्येक झगड़े को समाप्त करने के लिए इस तीव्रता से पग उठाता है कि जिस तीव्रता से वह आज कल फैला हुआ है। इसकी शिक्षा अत्यन्त सरल, ठोस और शान्तिप्रिय है-मानो ईश्वरीय आदेशों का एक दर्पण है और प्राकृतिक विधान का एक प्रतिबिम्ब है एवं हार्दिक विवेक और अन्तर्ज्ञान के लिए चमकता हुआ सूरज है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया पृष्ठ-81,82)

नूरे फुर्कां है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वह जिस से यह अनवार का दरिया निकला।
हक़ की तौहीद का मुर्झा ही चला था पौदा
ना गहाँ ग़ैब से यह चश्मये अस्फा निकला।
या इलाही! तेरा फ़ुर्कां है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वह सब इस में मुहैया निकला।
सब जगह छान चुके, सारी दुकानें देखीं
मए इर्फां का यही एक ही शीशा निकला।
किस से इस नूर की मुमकिन हो जहाँ में तश्बीह
वह तो हर बात में हर वस्फ़ में यक्ता निकला।
पहले समझे थे कि मूसा का असा है फ़ुर्कां
फिर जो सोचा तो हर इक लफ्ज़ मसीहा निकला।
है क़सूर अपना ही अन्धों का वगरना वह नूर
ऐसा चमका है कि सद नय्यरे बैज़ा निकला।
ज़िन्दगी ऐसों की क्या ख़ाक है इस दुनिया में
जिनका इस नूर के होते भी दिल अ'मा निकला।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया भाग-3,
हाशिया दर हाशिया पृष्ठ-305-6)

अए अज़ीज़ो! सुनो, कि बे क़ुरआँ
हक़ को मिलता नहीं कभी इन्साँ।
दिल में हर वक़्त नूर भरता है
सीना को ख़ूब साफ़ करता है।
उसके औसाफ़ क्या करूँ मैं बयाँ
वह तो देता है जाँ को और इक जाँ।
वह तो चमका है नय्यरे अकबर
इस से इन्कार हो सके क्योंकर।
बहर-ए-हिक्मत है वह कलाम तमाम
इश्क-ए-हक का पिला रहा है जाम।
दर्दमन्दों की है दवा वही एक
है ख़ुदा से ख़ुदा-नुमा एक।
हमने पाया खुद हुदा वही एक
हमने देखा है दिलरुबा वही एक।
उसके मुनकिर जो बात कहते हैं
यूँ ही इक वाहियात कहते हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन-ए-अहमदिया
भाग-3, हाशिया दर हाशिया, पृष्ठ-299-300)

वह्यी और इल्हाम

''जब परमेश्वर अपने भक्त को किसी परोक्ष बात पर उसकी दुआ के पश्चात् अथवा स्वयं ही सूचित करना चाहता है तो सहसा एक बेहोशी और ऊँघ उस पर पैदा कर देता है, जिस से वह अपने अस्तित्व को बिल्कुल भूल जाता है और ऐसा उस निश्चेतना और ऊँघ और बेहोशी

में डूबता है जैसे कोई पानी में गोता मारता है और नीचे पानी के चला जाता है। अस्तु, जब भक्त उस ऊँघ की हालत से जो जल में गोता लगाने से बहुत मिलती जुलती है, बाहर आता है तो अपने अन्त:करण में कुछ ऐसा अनुभव करता है जैसे एक ध्वनि की गूँज हो रही है और जब वह गूँज कुछ कम होती है तो सहसा उसको अपने अन्दर से एक अत्यन्त सार्थक और समुचित और सूक्ष्म और आनन्दप्रद कलाम का अनुभव हो जाता है और यह ऊँघ का गोता एक बहुत आश्चर्यजनक विषय है जिसके चमत्कारों का वर्णन करने के लिए शब्दों में सामर्थ्य नहीं। यही अवस्था है जिससे ब्रहज्ञान का एक स्रोत इन्सान पर फूट पड़ता है क्योंकि जब बार-बार दुआ करने के समय अल्लाह तआला उस गोता और ऊँघ की अवस्था को अपने भक्त पर आच्छादित करके उसकी प्रत्येक दुआ का उसको एक सूक्ष्म और आनन्दप्रद कलाम में उत्तर देता है और प्रत्येक प्रश्न पर वे भेद उस पर खोलता है जिनका खुलना मानवीय शक्ति से बाहर है, तो यह बात उसके लिए और अधिक ईश्वर-ज्ञान और प्रभु की पूर्ण पहचान का कारण बन जाती है। भक्त का दुआ करना और ख़ुदा का अपनी ख़ुदाई तजल्ली से प्रत्येक दुआ का उत्तर देना यह एक ऐसा विषय है मानों इस जगत् में भक्त अपने प्रभु को देख लेता है और दोनों जगत् उसके लिए बिना किसी अन्तर के एक जैसे हो जाते हैं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन-ए-अहमदिया
हाशिया दर हाशिया, पृष्ठ-260, 262)

''इल्हाम की पाँचवी सूरत वह है जिसका मनुष्य के हृदय से कोई सम्बन्ध नहीं अपितु एक बाहरी ध्वनि सुनाई पड़ती है तथा यह ध्वनि ऐसी प्रतीत होती है जैसे एक पर्दे के पीछे से कोई आदमी बोलता है। किन्तु यह ध्वनि अत्यानन्दप्रद, सुस्पष्ट और अपेक्षाकृत तेज़ी के साथ होती है

और हृदय को उससे एक आनन्द का अनुभव होता है। मनुष्य किसी सीमा तक प्रभु में डूबा हुआ होता है कि सहसा यह ध्वनि गूँज उठती है और आवाज़ सुनकर वह हैरान रह जाता है कि कहाँ से यह आवाज़ आई और किसने मुझसे कलाम किया तथा आश्चर्य चकित होकर आगे पीछे देखता है। फिर वह समझा जाता है कि किसी फ़रिश्ते ने आवाज़ दी है। यह बाहरी आवाज़ प्राय: उस अवस्था में खुशखबरी के रूप में आती है जब आदमी किसी विषय में अत्यन्त चिन्तित और दु:खी होता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया हाशिया दर हाशिया, पृष्ठ-287)

''यही क़ानून है कि जिसके पास कुछ प्रकाश है उसी को और प्रकाश भी दिया जाता है और जिसके पास कुछ नहीं उसको कुछ नहीं दिया जाता। जो व्यक्ति नेत्रों की ज्योति रखता है वही सूर्य का प्रकाश पाता है और जिसके पास नेत्रों की ज्योति नहीं वह सूर्य के प्रकाश से भी वंचित रहता है और जिसको प्राकृतिक ज्योति कम मिली है उसको दूसरा प्रकाश भी कम ही मिलता है और जिसको प्राकृतिक ज्योति अधिक मिली है उसको दूसरा प्रकाश भी अधिक मिलाता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया हाशिया पृष्ठ-195,196)

''ख़ुदा तआला ने अपने आश्चर्यजनक संसार को तीन भागों में विभक्त कर रखा है:-

(1) भौतिक संसार जो आँखों और कानों और अन्य बाह्य इन्द्रियों के द्वारा और बाह्य साधनों के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

(2) आन्तरिक संसार जो बुद्धि और अनुमान के द्वारा समझ में आ सकता है।

(3) आन्तरिक दर आन्तरिक संसार जो ऐसा गूढ़ है जो समझ और कल्पना से दूर है। थोड़े हैं जो उससे परिचित हैं। वह नितान्त है, जिस

तक पहुँचने के लिए मात्र कल्पना के बुद्धि को शक्ति नहीं दी गई। उस संसार के बारे में कश्फ़,✷ व्हयी✷ और इल्हाम✷ के द्वारा पता चलता है न अन्य किसी साधन से। जिस प्रकार ईश्वर का विधान स्पष्ट रूप से सिद्ध और प्रमाणित है कि उसने इन दो पहले संसारों के जानने के लिए-जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है- मनुष्य को तरह-तरह की ज्ञानेन्द्रियाँ प्रदान की हैं। उसी प्रकार इस तीसरे संसार को जानने के लिए उस एक मात्र दाता ने मनुष्य के लिए एक साधन रखा है और वह साधन 'वह्यी' और 'इल्हाम' और 'कश्फ़' है जो किसी ज़माने में पूर्ण रूप से बन्द और समाप्त नहीं हो सकता अपितु उसकी शर्तों को पूरा करने वाले सदैव उसको पाते रहे हैं और हमेशा पाते रहेंगे।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-2, सुरमा चश्म आर्य, हाशिया, पृष्ठ-175-76)

हमारी आस्थाएँ

''हमारे मज़हब (धर्म के प्रति आस्था) का सारांश और निचोड़ यह है कि

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'ला इलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे' (अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं।) हमारी आस्था जो हम इस भौतिक जीवन में रखते हैं, जिसके साथ हम प्रभु की कृपा और उसकी दी हुई सामर्थ्य से इस नाशवान संसार के कूच करेंगे यह है कि हमारे स्वामी और मालिक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम 'ख़ातमुन्नबीईन व

✷ कश्फ़ = स्वप्न में देखना, अर्द्ध निद्रावस्था में आध्यात्मिक दृश्य देखना। ✷ वह्यी = संकेत करना, विशेष ईशवाणी का संकेत। ✷ इल्हाम = ईशवाणी।

ख़ैरूल मुर्सलीन' हैं। अर्थात् समस्त नबियों की मोहर और सब रसूलों से श्रेष्ठ हैं, जिनके हाथ से धर्म को पूर्णता प्राप्त हुई और वह नेमत अपनी सम्पूर्णता की चरम सीमा को पहुँच चुकी, जिसके द्वारा मनुष्य सन्मार्ग को ग्रहण कर के ख़ुदा तक पहुँच सकता है। हम पूर्ण विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन समस्त आसमानी (ईश्वरीय) ग्रन्थों का ख़ातम अर्थात् मोहर और सर्वश्रेष्ठ है और एक शोशा या नुक्ता (बिन्दु) उसके विधान और उसकी सीमाओं और आदेशों से अधिक नहीं हो सकता और न कम हो सकता है। अब कोई ऐसी 'व्हयी' या ऐसा 'इल्हाम' परमेश्वर की ओर नहीं हो सकता जो क़ुर्आन के आदेशों को परिवर्तित या समाप्त कर सकता हो अथवा किसी एक आदेश में परिवर्तित या उसे न्यूनाधिक कर सकता हो। यदि कोई ऐसा विचार करे तो हमारे निकट मोमिनों के सम्प्रदाय से पृथक और काफ़िर और बेईमान हैं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला औहाम पृष्ठ पृष्ठ-169,170)

''और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि ख़ुदा तआला के सिवा कोई उपास्य नहीं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके रसूल और ख़ातमुल अम्बिया हैं और हम ईमान लाते हैं कि फ़रिश्ते हक़ (सत्य) और हशर-ए-अजसाद (शरीर का अन्त) हक़ और रोज़-ए-हिसाब (निर्णय का दिन) हक़ और जन्नत हक़ और जहनुम हक़ है अर्थात् स्वर्ग और नरक सत्य हैं और हम ईमान लाते हैं कि जो कुछ अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया है और जो कुछ हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है वह सब ऊपर किए गए वर्णन के अनुसार सत्य हैं और हम ईमान लाते हैं कि जो व्यक्ति इस इस्लामी शरीअत में से एक ज़र्रा कम करे अथवा एक ज़र्रा अधिक करे या कर्तव्यों के त्यागने या अनुचित आज्ञा

देने की नींव डाले वह बेईमान और इस्लाम से भटका हुआ है और हम अपनी जमाअत को नसीहत करते हैं कि वह सच्चे हृदय से इस कलिमा पर ईमान रखें कि

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

लाइलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह और इसी पर मरें और सब नबी और सब पुस्तकें जिनकी सच्चाई पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है, उन सब पर ईमान लावें और रोज़ा, नमाज़, ज़कात, हज और अल्लाह तआला और उसके रसूल के निश्चित किए हुए समस्त कर्तव्यों को कर्तव्य समझ कर और समस्त निषिद्ध बातों को निषिद्ध समझ कर ठीक ठीक इस्लाम पर आचरण करें। अस्तु, वह सभी बातें जिन पर विगत महापुरुषों का सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक रूप में एक मत था और वह बातें जो सुन्नत जमाअत के बुज़ुर्गों के सामूहिक मत से इस्लाम कहलाता है उन सब को स्वीकार करना कर्तव्य है। हम आसमान और ज़मीन को इस बात पर साक्षी ठहराते हैं कि यही हमारा धर्म है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-14, अय्यामुस्सुलह पृष्ठ-323)

''हे समस्त वे लोगों जो पृथ्वी पर रहते हो! और हे समस्त वे मानवीय आत्माओ!! जो पूर्व और पश्चिम में आबाद हो, मैं पूरे जोर के साथ आपको इस तरफ आमन्त्रित करता हूँ कि अब पृथ्वी पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो पवित्र क़ुर्आन ने बताया है और सदा के आध्यात्मिक जीवन वाला ''नबी'' प्रताप और पवित्रता के सिंहासन पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-15, तिरयाक़ुल क़ुलूब, पृष्ठ-141)

अहमदिया सम्प्रदाय के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मुक़ाम

''स्वप्न में देखा कि लोग एक मोहयी अर्थात् ज़िन्दा करने वाले को तलाश करते फिरते हैं। एक व्यक्ति इस विनीत के सामने आया और संकेत करते हुए उसने कहा कि-

هٰذَا رَجُلٌ يُحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ

अर्थात् यह वह व्यक्ति है जो रसूलुल्लाह से मोहब्बत रखता है। इस वाक्य का तात्पर्य यह था कि इस पदवी के लिए सबसे बड़ी शर्त रसूले ख़ुदा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम है, सो वह शर्त इस व्यक्ति में स्पष्ट रूप में विद्यमान है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1, बराहीन अहमदिया हाशिया दर हाशिया पृष्ठ-598)

''दुनिया मुझे स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि, मैं दुनिया में से नहीं हूँ किन्तु जिनकी प्रकृति को उस जगत का अंश दिया गया है, वे मुझे स्वीकार करते हैं और करेंगे। जो मुझे छोड़ता है वह उसको छोड़ता है, जिसने मुझे भेजा है और जो मुझ से सम्बन्ध जोड़ता है वह उससे सम्बन्ध जोड़ता है, जिसकी ओर से मैं आया हूँ। मेरे हाथ में एक दीपक है, जो व्यक्ति मेरे पास आता है वह अवश्य ही उस प्रकाश से हिस्सा पाएगा। किन्तु जो व्यक्ति सन्देह और शंका से दूर भागता है, वह अन्धकार में डाल दिया जाएगा। इस युग का अभेद्य दुर्ग मैं हूँ, जो मुझ में प्रवेश करता है वह चोरों और डाकुओं और दरिन्दों से अपने प्राण बचाएगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, फ़तह इस्लाम पृष्ठ-34)

''और मुझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि मुझे पवित्र क़ुर्आन के हक़ायक़ और मुआरिफ़ (तथ्य और सूक्ष्म ज्ञान)

समझने में प्रत्येक व्यक्ति पर ग़लबा (विजय) दिया गया है। यदि कोई मौलवी मुख़ालिफ़ मेरे मुक़ाबिल पर आता जैसा कि मैंने क़ुर्आनी तफ़सीर (व्याख्या) के लिए बार-बार विरोधी मौलवियों को बुलाया तो ख़ुदा उसको ज़लील और शर्मिन्दा करता। अस्तु, जो पवित्र क़ुर्आन को समझने की पवित्र शक्ति मुझ को दी गई है, यह अल्लाह का चमत्कार है। अल्लाह तआला के फज़्ल से मुझे पूर्ण विश्वास है कि अति शीघ्र दुनिया देखेगी कि मैं इस बयान में सच्चा हूँ।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, सिराज-ए-मुनीर, पृष्ठ-41)

''मैं अकेला नहीं, वह मौला करीम मेरे साथ है और कोई उस से बढ़ कर मुझ से निकटतम नहीं। उसी के फ़ज़्ल से मुझ को यह 'आशिकाना' प्रवृत्ति मिली है कि दु:ख उठा कर भी उसके धर्म (इस्लाम) के लिए सेवा करूँ और इस्लाम की धार्मिक विजय के लिए पूरे उत्साह और शुद्ध हृदय से अपनी सेवाएँ समर्पित करूँ। इस कार्य पर स्वयं उसी ने मुझे नियुक्त किया है। अब किसी के कहने से मैं रुक नहीं सकता।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-5, आईना कमालात-ए-इस्लाम पृष्ठ-35)

''एक पवित्रात्मा व्यक्ति के लिए यह पर्याप्त था कि ख़ुदा ने मुझे झूठ बाँधने वालों की तरह नष्ट नहीं किया अपितु मेरे बाहर और मेरे अन्दर एवं मेरे शरीर मेरी आत्मा पर वह उपकार किए जिनको मैं गिन नहीं सकता। मैं जवान था, जब ख़ुदा की 'वह्यी' और 'इल्हाम' की घोषणा की और अब मैं बूढ़ा हो गया तथा घोषणा के आरम्भ पर बीस वर्ष से अधिक समय बीत गया। बहुत से मेरे मित्र और सम्बन्धी जो मेरे से छोटे थे, उनकी मृत्यु हो गई और उसने मुझे दीर्घायु प्रदान की एवं प्रत्येक विपत्ति के समय मेरा सहायक बना रहा। अस्तु, क्या उन लोगों

के यही चिन्ह हुआ करते हैं कि जो ख़ुदा तआला पर झूठ बाँधते हैं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-11, अंजाम-ए-आथम पृष्ठ 50-51)

पवित्र सम्प्रदाय की स्थापना और उपदेश

''हे मेरे मित्रो! जो मेरी बैअत में दाख़िल हो, ख़ुदा हमें और तुम्हें उन बातों की सामर्थ्य दे जिनसे वह राज़ी हो जाए। आज तुम थोड़े हो और लोगों की दृष्टि में तुच्छ समझे जा रहे हो और एक कठिन परीक्षा का समय तुम पर है, ठीक उसी ईश्वरीय विधान के अनुसार जो आदिकाल से जारी है। प्रत्येक दिशा से यत्न होगा कि तुम ठोकर खाओ एवं तुम हर तरह से सताए जाओगे और भांति-भांति की बातें तुम्हें सुननी पड़ेगी। प्रत्येक जो तुम्हें हाथ या ज़बान से दु:ख देगा वह समझेगा कि इस्लाम की सेवा कर रहा है। कुछ ईश्वरीय परीक्षाओं का भी तुम्हें सामना करना पड़ेगा ताकि तुम हर प्रकार से आज़माए जाओ। सो तुम इस समय सुन रखो कि तुम्हारी सफलता एवं विजय का यह रास्ता नहीं कि तुम अपने शुष्क तर्कों से काम लो अथवा हंसी ठट्ठा की बातें करो या गाली के बदले गाली दो क्योंकि यदि तुम ने इन्हीं मार्गों को अपनाया तो तुम्हारे हृदय कठोर हो जाएँगे और तुम में केवल बातें ही बातें होंगी, जिनसे ख़ुदा तआला घृणा करता है और उसे अच्छी दृष्टि से नहीं देखता है। अस्तु, तुम ऐसा न करो कि तुम अपने पर दो अभिशाप एकत्र कर लो। एक ख़िलक़त अर्थात् सृष्टि की और दूसरा परमेश्वर का भी।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला औहाम, पृष्ठ- 546,547)

''यह मत खयाल करो कि ख़ुदा तुम्हें नष्ट कर देगा। तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो, जो ज़मीन में बोया गया। ख़ुदा फर्माता है कि यह

बीज बढ़ेगा और फूलेगा और हर तरफ से इसकी शाखाएं निकलेंगी और एक बहुत बड़ा वृक्ष हो जाएगा, अत: उस व्यक्ति को बधाई हो जो परमेश्वर की बात पर ईमान रखे तथा मध्य में आने वाली विपत्तियों से न डरे क्योंकि ऐसी विपत्तियों का आना भी आवश्यक है ताकि परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा ले कि कौन अपनी बैअत की घोषणा में सच्चा है और कौन झूठा है। वह जो किसी परीक्षा-जन्य विपत्ति से डगमगायेगा वह कुछ भी ख़ुदा की हानि नहीं करेगा और दुर्भाग्य उसको नरक तक पहुंचाएगा। यदि वह पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा था। किन्तु वे सभी लोग जो अन्त तक धैर्य रखेंगे और उन पर विपत्तियों के भूचाल आएँगे तथा आपदाओं की आँधियाँ चलेंगी और क़ौमें तिरस्कार जन्य हंसी और ठट्ठा करेंगी और संसार उनसे अत्यन्त घृणा करने लगेगा, वे अन्तत: विजयी होंगे तथा बरकतों और वदान्यताओं के द्वार उन पर खोले जाएँगे।

ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं अपनी जमाअत को सूचित करूँ कि जो लोग ईमान लाए, ऐसा ईमान कि उसके साथ दुनिया का मिश्रण नहीं और वह ईमान हंसी ठट्ठा या कायरता से दूषित नहीं तथा वह ईमान आज्ञा पालन के किसी स्तर से वंचित नहीं- ऐसे लोग ख़ुदा के प्रियजन हैं और ख़ुदा फ़र्माता है कि वही हैं जिनका क़दम सच्चाई का क़दम है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-20, अलवसीयत, पृष्ठ-309)

''अन्याय पर हठ कर के सच्चाई का खून न करो। सत्य को स्वीकार कर लो यद्यपि एक बच्चे से मिले। यदि विरोधी की ओर सत्य पाओ तो फिर तुरन्त अपने शुष्क तर्क को छोड़ दो। सत्य पर ठहर जाओ और सच्ची गवाही दो। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

فَاجۡتَنِبُوا الرِّجۡسَ مِنَ الۡاَوۡثَانِ وَاجۡتَنِبُوۡا قَوۡلَ الزُّوۡرِ

(अल हज्ज - 31)

अर्थात् बुतों (मूर्तियों) की अपवित्रता से बचो और झूठ से भी (सूरत अलहज आयत : 31) क्योंकि वह (झूठ) बुत से कम नहीं जो वस्तु सत्य रूपी क़िबला से तुम्हारा मुख फेरती है वही तुम्हारे मार्ग में बुत है। सच्ची गवाही दो। चाहे तुम्हारे पिताओं या भाइयों या मित्रों पर हो। चाहिए कि कोई शत्रुता भी तुम्हारे न्याय में बाधक न हो। परस्पर की संकीर्णता अनुदारता, ईर्ष्या-द्वेष एवं और कठोरता छोड़ दो और एक हो जाओ। पवित्र क़ुर्आन के बड़े आदेश दो ही हैं--- प्रथम अल्लाह की तौहीद (अद्वैतवाद और निराकार का सिद्धान्त) तथा उससे प्रेम और उसकी आज्ञा का पालन। दूसरा अपने भाइयों और सम्पूर्ण मानव-समाज के प्रति सहानुभूति।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला औहाम भाग-2, पृष्ठ-550)

''सच्चाई ग्रहण करो! सच्चाई ग्रहण करो!! क्योंकि वह (ख़ुदा) देख रहा है कि तुम्हारे हृदय कैसे हैं! क्या मनुष्य उसको भी धोखा दे सकता है? क्या उसके सम्मुख भी छल प्रपंच और मक्करियाँ पेश जाती हैं?

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला औहाम भाग -2 पृष्ठ-549)

''सो हे वे सभी लोगो! जो अपने निकट मेरी जमाअत में शुमार करते हो, आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत शुमार किए जाओगे जब सचमुच संयम के मार्गों पर क़दम मारोगे। अत: अपनी पाँचों वक़्त की नमाज़ों को ऐसी भय एवं एकाग्रचित्त होकर अदा करो कि मानो तुम ख़ुदा तआला को देखते हो तथा अपने रोजों को ख़ुदा के लिए सच्चाई के साथ पूरे करो। प्रत्येक जो ज़कात के योग्य है, ज़कात दे और जिस पर हज फ़र्ज़ हो चुका है और कोई बाधा नहीं वह हज करे। नेकी (पुण्य) को

बड़ी सावधानी से अदा करो और बुराई को उससे घृणा करते हुए छोड़ दो। निश्चय पूर्वक याद रखो, कोई कर्म परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता जो संयम से खाली हो। प्रत्येक पुण्य की जड़ संयम है। जिस कार्य में यह जड़ नष्ट नहीं होगी, वह कर्म भी नष्ट नहीं होगा। यह अत्यावश्यक है कि कष्टों और विपत्तियों और दु:खों के नाना रूपों से तुम्हारी परीक्षा भी हो जैसा कि पहले मोमिनों की परीक्षा हुई। अस्तु, सावधान हो जाओ। ऐसा न हो कि ठोकर खाओ। ज़मीन तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती अगर आसमान से तुम्हारा दृढ़ सम्बन्ध है। जब कभी तुम अपनी हानि करोगे तो अपने हाथों से, न कि शत्रु के हाथों से! यदि तुम्हारी समस्त सांसारिक मान-मर्यादा जाती रहे तो ख़ुदा तुम्हें एक कभी न समाप्त होने वाली प्रतिष्ठा आसमान पर देगा। अत: तुम उसको न छोड़ो। तुम्हें अवश्य दु:ख दिए जाएँगे और अपनी कई आशाओं से तुम्हें वंचित किया जाएगा। इस से तुम हताश न हो क्योंकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें आज़माता है कि तुम उसके मार्ग में दृढ़ संकल्प हो या नहीं। यदि तुम चाहते हो कि आसमान पर भी फ़रिश्ते तुम्हारी प्रशंसा करें तो तुम मारें खाओ और प्रसन्न रहो, गालियाँ सुनो और प्रभु का धन्यवाद करो, असफ़लताएँ देखो और सम्बन्ध न तोड़ो। तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो, सो वे शुभ कार्य करो जो अपनी सम्पूर्णता में चरमसीमा पर हों।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-19, कश्ती-ए-नूह, पृष्ठ-15)

''तुम यदि चाहते हो कि आसमान पर तुम से ख़ुदा राज़ी हो तो तुम परस्पर ऐसे एक हो जाओ जैसे एक पेट में से दो भाई। तुम में से अधिक आदरणीय वही है जो अधिक अपने भाई के अपराधों को क्षमा करता है। अभागा है वह जो हठ करता है और क्षमा नहीं करता, अत: उसका मुझसे सम्बन्ध नहीं। परमेश्वर के अभिशाप से अधिक से अधिक डरते रहो

क्योंकि वह पवित्र और स्वाभिमानी है। दुष्कर्मी ख़ुदा की समीपता प्राप्त नहीं कर सकता तथा प्रत्येक जो उसके नाम के लिए आत्मसमर्पण का भाव नहीं रखता, उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकता। अभिमानी उसकी समीपता प्राप्त नहीं कर सकता। अत्याचारी उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकता। वह जो धरोहर को क्षति पहुँचाता है वह परमेश्वर की समीपता प्राप्त नहीं कर सकता। वह जो सांसारिकता पर कुत्तों और चींटियों और गिद्धों की भांति गिरते हैं तथा संसार में ऐश्वर्यवान हैं, वे उसकी निकटता प्राप्त नहीं कर सकते। प्रत्येक अपवित्र आँख उससे दूर है, प्रत्येक अपवित्र हृदय उससे अपरिचित है। वह जो उसके लिए अग्नि में है वह अग्नि से मुक्ति पाएगा। वह जो उसके लिए रोता है वह हंसेगा। वह जो उसके लिए दुनिया से सम्बन्ध तोड़ता है वह उसे मिलेगा। तुम सत्य हृदय से और पूरी सच्चाई के साथ और तीव्र गति से ख़ुदा के मित्र बनो ताकि वह भी तुम्हारा मित्र बन जाए। तुम अपने अधीनों, अपनी पत्नियों और अपने निर्धन भाइयों पर दया करो ताकि आसमान पर तुम पर भी दया की जाए। तुम सचमुच उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जाए।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-19, कश्ती-ए-नूह पृष्ठ-12,13)

जमाअत को नसीहत

''मैं अपनी जमाअत को नसीहत करता हूँ कि अहंकार से बचो क्योंकि अहंकार हमारे प्रतापी ख़ुदा के नेत्रों में अत्यन्त घृणित कार्य है किन्तु तुम कदाचित् नहीं समझोगे कि अहंकार क्या चीज़ है? अत: मुझ से समझ लो कि मैं ख़ुदा की आत्मा से बोलता हूँ।

प्रत्येक जो अपने भाई को इसलिए तुच्छ समझता है कि वह (स्वयं) उस से अधिक विद्वान या अधिक बुद्धिमान या अधिक कलाकार है वह

अहंकारी है क्योंकि वह ख़ुदा को ज्ञान और बुद्धि का स्रोत नहीं समझता और अपने आप को कुछ चीज़ समझता है। क्या ख़ुदा यह सामर्थ्य नहीं रखता कि उसको पागल कर दे और उसके उस भाई को जिसको वह छोटा समझता है, उससे श्रेष्ठ बुद्धि-विद्या और कला दे दे। ऐसा ही वह व्यक्ति जो अपने किसी धन और ऐश्वर्य की कल्पना करके अपने भाई को तुच्छ समझता है, वह भी अहंकारी है क्योंकि वह इस बात को भूल गया है कि ऐश्वर्य ख़ुदा ने ही दिया था। वह अन्धा है और वह नहीं जानता कि वह ख़ुदा पूर्ण अधिकार रखता है कि उस पर ऐसी विपत्ति ले आए कि वह क्षण मात्र में रसातल में जा पड़े और उसके उस भाई को जिसको वह तुच्छ समझता है उससे बढ़ कर धनैश्वर्य प्रदान करे और ऐसा ही वह व्यक्ति जो अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर घमण्ड करता है या अपनी सुन्दरता और शक्ति पर अहंकार करता है और अपने भाई का व्यंग्य और हंसी ठट्ठे से निकृष्टता सूचक नाम रखता है और उसके शारीरिक दोष लोगों को सुनाता है, वह भी घमण्डी है। वह उस ख़ुदा से अनभिज्ञ है कि जो एक क्षण में उस को ऐसा शारीरिक रोग लगा दे कि उस भाई से उस को निकृष्टतम और कुरूप बना दे।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-18, नुज़ूलुल मसीह पृष्ठ-402)

दूसरों के प्रति कुविचार (बदज़न्नी)

''दूसरों के प्रति कुविचार एक ऐसी भयंकर विभीषिका है जो ईमान को अतिशीघ्र इस प्रकार भस्म कर देती है जैसा कि धधकती हुई अग्नि शुष्क घास को। वह जो ख़ुदा के नबियों के प्रति कुविचार और दूषित विचार रखता है, ख़ुदा स्वयं उस का शत्रु हो जाता है और उस से युद्ध के लिए खड़ा होता है। वह अपने पैग़म्बरों के लिए इतना स्वाभिमान रखता

है जिसकी उपमा प्रस्तुत नहीं की जा सकती। मेरे पर जब भांति-भांति के आक्रमण हुए तो वही ख़ुदा का स्वाभिमान मेरे लिए जाग उठा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-20, अलवसीयत हाशिया पृष्ठ-317)

''मैं सच कहता हूँ कि दूसरों के प्रति कुविचार ऐसा भयंकर रोग है जो मनुष्य के ईमान को नष्ट कर देता है और श्रद्धा और सत्य के पथ भ्रष्ट करके दूर फेंक देता है और मित्रों को शत्रु बना देता है। सिददीकों (सत्यव्रतियों) की विशेषताएँ प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य दूसरों के प्रति कुविचार से बहुत ही बचे। यदि किसी के सम्बन्ध में कोई दूषित विचार पैदा हो तो अत्यधिक इस्तिग़फ़ार (ईश्वर से क्षमा याचना) करे तथा ख़ुदा से दुआएँ करे ताकि उस पाप और उसके दुष्परिणाम से बच जावे जो उस कुविचार के पीछे आने वाला है। उसको कभी साधारण वस्तु नहीं समझना चाहिए। यह अति भयंकर रोग है जिस से मनुष्य का शीघ्र ही सर्वनाश हो जाता है।''

(मल्फ़ूज़ात भाग-1, पृष्ठ-372)

''और चाहिए कि तुम भी सहानुभूति और अपने अन्त:करणों और अन्तरात्माओं को पवित्र करने से 'रूहुलक़ुदूस' (महान् पवित्रात्मा) से हिस्सा लो क्योंकि बिना 'रूहुल क़ुदूस' के वास्तविक संयम प्राप्त नहीं हो सकता। विकृत भावनाओं को सर्वथा त्याग कर ख़ुदा की इच्छा के लिए वह मार्ग ग्रहण करो जो उससे अधिक कोई संकीर्ण मार्ग न हो। सांसारिक भोगों पर अनुरक्त मत हो क्योंकि वह परमेश्वर से पृथक करते हैं। परमेश्वर के लिए जीवन की कटुताओं को सहन करो। वह पीड़ा जिस से ख़ुदा प्रसन्न हो, उस विजय से श्रेष्ठ है जो ख़ुदा के प्रकोप का कारण बने। उस प्रेम को छोड़ दो जो ख़ुदा के क्रोध के निकट ले जाए। यदि तुम हृदय को स्वच्छ और पवित्र करके उसकी तरफ़ आ जाओ तो

प्रत्येक क्षेत्र में वह तुम्हारी सहयता करेगा और कोई शत्रु तुम्हें हानि नहीं पहुँचा सकेगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-20, अलवसीयत पृष्ठ-307)

'लिबासुत्त्क्वा' (संयम का वस्त्र) पवित्र क़ुर्आन का शब्द है। यह इस बात की ओर संकेत है कि आत्मा की सुन्दरता और सजावट संयम से ही पैदा होती है। संयम यह है कि मनुष्य अल्लाह तआला की समस्त धरोहरों और ईमानी प्रतिज्ञाओं और इसी प्रकार सृष्टि की सभी धरोहरों और किए हुए वचनों को यथाशक्ति पूरा करे अर्थात् उनके सूक्ष्म अति सूक्ष्म पक्षों पर अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार आचरण करे।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-21, ज़मीमा बराहीन अहमदिया भाग-5, पृष्ठ-210)

अहमदिया सम्प्रदाय का भविष्य

'' मैं पूर्ण निश्चय से कहता हूँ कि मैं सत्य पर हूँ और ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से इस क्षेत्र में मेरी ही विजय है। जहाँ तक मैं दूरदर्शी दृष्टि से काम लेता हूँ तो मैं पूरे संसार को अन्तत: अपनी सच्चाई के क़दमों के नीचे देखता हूँ और निकट है कि मैं एक महान विजय पाऊँ क्योंकि मेरी वाणी के समर्थन में एक अन्य वाणी बोल रही है और मेरे हाथ की मज़बूती के लिए एक और हाथ चल रहा है, जिसको दुनिया नहीं देखती, किन्तु मैं देख रहा हूँ। मेरे अन्दर एक आसमानी रूह बोल रही है जो मेरे शब्द-शब्द और अक्षर-अक्षर को जीवन प्रदान करती है। आसमान पर एक जोश और उबाल पैदा हुआ है जिसने एक पुतली की भाँति इस मुश्त-ए-ख़ाक (विनीत) को खड़ा कर दिया हैं। प्रत्येक वह व्यक्ति जिस पर तौबा (प्रायश्चित) का द्वार बन्द नहीं, निकट ही देख लेगा कि मैं अपनी तरफ से नहीं हूँ। क्या वे आंखें हैं जो सच्चे

को पहचान नहीं सकतीं? क्या वह भी ज़िन्दा है जिसको इस आसमानी आवाज़ का अनुभव नहीं?

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, इज़ाला ओहाम, पृष्ठ-403)

''निश्चयपूर्वक समझो कि यह ख़ुदा के हाथ का लगाया हुआ पौधा है। ख़ुदा इसको कदापि नष्ट नहीं करेगा। वह राज़ी नहीं होगा जब तक कि उसको चरम सीमा तक न पहुंचा दे। वह उसकी सिंचाई करेगा और उसके चारों ओर बाड़ लगाएगा और आश्चर्यजनक उन्नति देगा। क्या तुमने कुछ कम ज़ोर लगाया? अत: यदि यह मनुष्य का कार्य होता तो कब का यह वृक्ष काटा जाता और उसका लेश मात्र भी शेष न रहता।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-11, अन्जाम-ए-आथम, पृष्ठ-64)

अन्तिम विजय

''ज़मीन के लोग ख़याल करते होंगे कि कदाचित् अन्तत: ईसाई धर्म संसार में फैल जाए अथवा बौद्ध धर्म समस्त संसार पर छा जाए, किन्तु वे इस ख़याल में ग़लती पर हैं। याद रहे, पृथ्वी पर कोई घटना नहीं घटती जब तक उस बात का आकाश पर निर्णय न हो जाए। अत: आसमान का ख़ुदा (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) मुझे बतलाता है कि अन्तत: इस्लाम का धर्म हृदयों पर विजय प्राप्त करेगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-21, बराहीन-ए-अहमदिया भाग-5, पृष्ठ-427)

रूह

''विचार करने पर विदित होता है कि रूह की जननी शरीर ही है। गर्भवती स्त्री के गर्भ में रूह कभी ऊपर से नहीं गिरती अपितु वह एक

प्रकार की ज्योति है जो वीर्य में गुप्त रूप में निहित रहती है और शरीर के विकास के साथ वह भी विकसित होती जाती है। ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी हमें समझाती है कि आत्मा उस शरीर में से ही उत्पन्न हो जाती है जो वीर्य द्वारा गर्भ में तैयार होता है। जैसा कि अल्लाह तआला का अपनी पवित्र वाणी क़ुर्आन मजीद में कथन है:-

ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ

(अल मोमिनून - 15)

अर्थात् फिर हम उस शरीर को जो गर्भ में तैयार हुआ था एक अन्य रूप में प्रकट करते हैं एवं एक नवीन सृष्टि का रूप उसे प्रदान करते हैं जिसे जीवात्मा की संज्ञा दी जाती है। ख़ुदा तआला अनन्य वरदानों का स्रोत और ऐसा महान सृष्टा है कि उसके समान अन्य कोई नहीं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-10, इस्लामी उसूल की फिलासफी, पृष्ठ- 321)

''जैसे कोई बाग़ पानी के बिना जीवित नहीं रह सकता है उसी प्रकार कोई ईमान सत्कर्मों के बिना ज़िन्दा ईमान नहीं कहला सकता। यदि ईमान हो और सत्कर्म न हों तो वह ईमान हेय है और यदि सत्कर्म हों और ईमान न हो तो वे कर्म आडम्बर मात्र हैं। इस्लामी स्वर्ग की यही वास्तविकता है कि वह इस संसार के ईमान और कर्म का एक प्रतिबिम्ब है। वह कोई नवीन चीज़ नहीं जो बाहर से आकर मनुष्य को मिलेगी, अपितु मनुष्य का स्वर्ग उसके भीतर से ही निकलता है तथा प्रत्येक का स्वर्ग उसी का ईमान और उसी के सत्कर्म हैं। जिनका इसी संसार में आनन्दानुभव शुरू हो जाता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-10, इस्लामी उसूल की फिलासफी, पृष्ठ-390)

मृत्यु के पश्चात् का जीवन

''इस्लाम में यह उच्चकोटि की फिलासफी है कि प्रत्येक को कब्र में ही ऐसा शरीर मिल जाता है जो कष्ट और आनन्द की अनुभूति करने के लिए आवश्यक होता है। हम ठीक-ठीक नहीं कह सकते कि वह शरीर किस तत्व से तैयार होता है क्योंकि यह नश्वर शरीर तो प्राय: नष्ट हो जाता है और न कोई देखता है कि वास्तव में यही शरीर कब्र में ज़िन्दा होता है इसलिए कि कभी-कभी यह शरीर जलाया भी जाता है और अजायबघरों में भी शव रखे जाते हैं और दीर्घकाल तक कब्र से बाहर भी रखा जाता है। यदि यही शरीर ज़िन्दा हो जाया करता तो लोग उसको अवश्य देखते। किन्तु उसके बावजूद पवित्र क़ुर्आन से एक और सूक्ष्म रूप में ज़िन्दा हो जाना सिद्ध है। अत: हमें यह मानना पड़ता है कि किसी अन्य शरीर के द्वारा जिसको हम नहीं देख पाते मनुष्य को ज़िन्दा किया जाता है। सम्भवत: वह शरीर इसी शरीर के सूक्ष्म तत्वों से बनता है। तब शरीर मिलने के पश्चात् मानवीय शक्तियाँ सजग हो जाती हैं। यह दूसरा शरीर चूँकि पहले शरीर की अपेक्षा अति सूक्ष्म होता है इसलिए उस पर अनुभूतियों का द्वार विस्तृत रूप में खुलता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-13, किताबुल बरीया, पृष्ठ-70, 71)

विश्व के धर्म

''वे सभी सिद्धान्त जिन पर मुझे क़ायम किया गया है उनमें से एक यह है कि ख़ुदा ने मुझे सूचित किया है कि संसार में नबियों और पैग़म्बरों के द्वारा जितने धर्म फैल गए है और मज़बूती पकड़ गए हैं और पृथ्वी के एक भू-भाग पर छा गए हैं तथा एक आयु पा गए हैं और एक युग उन पर बीत गया है, उनमें से कोई धर्म भी मौलिक रूप से झूठा नहीं

और न उन नबियों में से कोई नबी झूठा है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, तोहफ़ा क़ैसरिया, पृष्ठ- 256)

''यह सिद्धान्त अत्यन्त प्यारा और शान्तिप्रद और मैत्री की नींव डालने वाला और चारित्रिक अवस्थाओं को सहायता देने वाला है कि हम उन सभी पैग़म्बरों को सच्चा समझ लें जो दुनिया में आए, चाहे भारत में प्रकट हुए अथवा फारस, में चीन में प्रकट हुए या किसी अन्य देश में, और ख़ुदा ने करोड़ों हृदयों में उनकी प्रतिष्ठा और महानता बिठा दी और उनके धर्म की जड़ क़ायम कर दी।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, तोहफ़ा कैसरिया, पृष्ठ-259)

गुनाह (पाप)

''गुनाह वास्तव में एक ऐसा विष है जो उस समय पैदा होता है कि जब मनुष्य ख़ुदा तआला की आज्ञापालन और उसके पुरजोश प्रेम और स्मरण से वंचित और बेनसीब हो, एवं जिस प्रकार एक वृक्ष जब ज़मीन से उखड़ जाए और पानी चूसने के योग्य न रहे तो वह शनै शनै सूखने लगता है तथा उसकी समस्त हरियाली नष्ट हो जाती है। यही हाल उस मनुष्य का होता है जिसका हृदय प्रभु-प्रेम से उखड़ा हुआ होता है फिर शुष्कता के समान पाप उस पर अपना अधिकार जमा लेता है। अतएव उस शुष्कता का इलाज ख़ुदा तआला के प्राकृतिक विधान में तीन प्रकार से है। (1) 'प्रेम' (2) 'इस्तिग़फ़ार' जिस के अर्थ हैं- दबाने और ढँकने की इच्छा, क्योकि जब तक मिट्टी में वृक्ष की जड़ जमी रहे तब तक वह हरियाली का उम्मीदवार होता है। (3) तीसरा इलाज 'तौबा' (प्रायश्चित) है अर्थात् जीवन का पानी खींचने के लिए अत्यन्त विनय पूर्वक प्रभु की ओर झुकना और अपने आप को उसके निकट करना और पाप के पर्दे

से शुभ कर्मों के साथ अपने आप को बाहर निकालना। तौबा 'केवल वाणी से नहीं अपितु तौबा की पूर्णता शुभ कर्मों के साथ है। सभी पुण्य कर्म तौबा की पूर्णता के लिए हैं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब, पृष्ठ-328, 329)

नजात (मुक्ति)

''मुक्ति का सिद्धान्त जिस का इंजीलो में वर्णन किया गया है कि हज़रत मसीह के सूली पर मरने के द्वारा ही गुनाहों का ''कफ्फ़ारा'' प्राप्त हो सकता है। इस शिक्षा को पवित्र क़ुर्आन ने स्वीकार नहीं किया। यद्यपि हज़रत ईसा अलैहिस्स्लाम को पवित्र क़ुर्आन एक पवित्र नबी मानता है और प्रभु का प्यारा उसका निकटवर्ती तथा श्रीमुख (रोबदार चेहरे वाला) घोषित करता है परन्तु उसको केवल मनुष्य ही बताता है और मुक्ति के लिए इस बात को आवश्यक नहीं ठहराता कि एक पापी का बोझ किसी निरपराध पर डाल दिया जाए। यह बात बुद्धि भी स्वीकार नहीं करती कि पाप तो 'ज़ैद' करे और 'बकर' पकड़ा जाए। इस सिद्धान्त पर तो मानवीय सरकारों ने भी पालन नहीं किया। खेद है कि मुक्ति के सम्बन्ध में जैसा कि ईसाई साहिबों ने ग़लती की है इसी प्रकार आर्य समाज ने भी ग़लती की है और वास्तविक सच्चाई को भूल गए क्योंकि आर्य समाज की आस्था के अनुसार तौबा (प्रायश्चित) और इस्तिग़फ़ार (प्रभु से अपने पापों की क्षमा याचना करना) कुछ भी चीज़ नहीं और जब तक मनुष्य एक पाप के बदले वे सभी योनियों में चक्कर न काट ले जो उस पाप के लिए दण्ड के रूप में निश्चित हैं तब तक मुक्ति असम्भव है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-23, चश्म-ए-मा'रिफत, पृष्ठ-414)

जिहाद
(ख़ुदा तआला के मार्ग में संघर्ष)

''इस्लाम में कभी (धर्म के सम्बन्ध में) बल प्रयोग का पाठ नहीं पढ़ाया। यदि पवित्र क़ुर्आन और समस्त हदीसों और इतिहास की पुस्तकों को ध्यान पूर्वक देखा जाए और जहाँ तक इन्सान के लिए सम्भव है ध्यान से पढ़ा या सुना जाए तो इस विस्तृत ज्ञान के पश्चात् इस निश्चय पर पहुँचेंगे कि मानो यह आक्षेप कि इस्लाम ने धर्म को बल पूर्वक फैलाने के लिए तलवार उठाई है, बिल्कुल निराधार और लज्जास्पद है। यह उन लोगों की धारणा है जिन्होंने वैमनस्यता में पड़कर पवित्र क़ुर्आन और हदीस और इस्लाम की प्रमाणिक ऐतिहासिक पुस्तकों को नहीं देखा अपितु झूठ और देषारोपण से पूरा-पूरा काम लिया। किन्तु मैं जानता हूँ कि वह समय अब निकट आता जाता है कि सत्य के भूखे और प्यासे उन आक्षेपों की वास्तविकता को भली प्रकार जान लेंगे कि क्या उस धर्म को हम बल-पूर्वक फैलाया हुआ कह सकते हैं जिसके धर्म-ग्रन्थ पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट रूप में यह आदेश है कि -

(सूर: बकर: - 257) لَاۤ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ

अर्थात् धर्म में दाखिल करने के लिए बल-प्रयोग उचित नहीं। क्या हम विश्व के उस महान अवतार पैग़म्बर-ए-इस्लाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बल प्रयोग का आक्षेप लगा सकते हैं, जिसने मक्का शहर में तेरह वर्ष तक अपने समस्त मित्रों को दिन-रात यही उपदेश दिया कि शरारत का मुक़ाबला मत करो और धैर्य से काम लो हाँ, जब शत्रुओं की शरारत सीमा पार कर गई और इस्लाम-धर्म को जड़ से मिटा देने के लिए सब कौ़मों ने मिल कर कोशिश की तो उस समय ख़ुदा तआला का स्वाभिमान

जाग उठा कि जो लोग तलवार उठाते हैं वह तलवार से ही मारे जाएँ। अन्यथा क़ुर्आन शरीफ़ ने कदापि बलात् धर्म-प्रचार की शिक्षा नहीं दी। यदि बलात् धर्म-प्रचार की शिक्षा होती तो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहचर (सहाबी) धर्म में बल प्रयोग की शिक्षा के कारण इस योग्य न होते कि कठिन परीक्षाओं के अवसर पर सच्चे ईमानदारों की भाँति हृदय की सत्यता दिखा सकते। लेकिन हमारे सैयद व मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहचरों की वफ़ादारी एक ऐसा सत्य है कि उसके वर्णन करने की हमें आवश्यकता नहीं। यह बात किसी से छिपी नहीं कि उनकी सच्चाई और वफादारी के आदर्श इस श्रेणी के प्रकट हुए कि दूसरी कौमों में उसका उदाहरण मिलना कठिन है। उस वफ़ादार कौम ने तलवारों के नीचे भी अपनी वफ़ादारी और सच्चाई को नहीं छोड़ा अपितु अपने प्रतिष्ठित और पवित्र नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मित्रता में वह आदर्श प्रस्तुत किया कि मनुष्य में कभी वह सच्चाई पैदा नहीं हो सकती जब तक ईमान (के प्रकाश) से उसका दिल और सीना रोशन न हो।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-15, मसीह हिन्दुस्तान में, पृष्ठ-11,12)

''समस्त सच्चे मुसलमान जो दुनिया में हुए हैं, कभी उनकी यह आस्था नहीं हुई कि इस्लाम को तलवार से फैलाना चाहिए अपितु सदैव इस्लाम अपनी निजी विशेषताओं के कारण से ही संसार में फैला है, अत: जो लोग मुसलमान कहला कर केवल यही बात जानते हैं कि इस्लाम को तलवार से फैलाना चाहिए, वे इस्लाम की निजी विशेषताओं से सर्वथा अनभिज्ञ हैं।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-15, तिरयाकुल क़ुलूब, हाशिया पृष्ठ-167)

दुआ (प्रार्थना)

''जब ख़ुदा की कृपा निकट आती है तो वह प्रार्थना के स्वीकार होने के साधन जुटा देता है। हृदय में एक आद्रता और दर्द पैदा हो जाती है किन्तु जब प्रार्थना के स्वीकार का समय नहीं होता तो हृदय में संतोष और झुकाव पैदा नहीं होता। दिल पर कितना ही ज़ोर डालो परन्तु चित्त में एकाग्रता नहीं होती। उसका कारण यह है कि कभी अल्लाह तआला अपने निर्णय मनवाना चाहता है और कभी प्रार्थना स्वीकार करता है। इसलिए मैं तो जब तक ईश्वर की आज्ञा के लक्षण न पा लूँ, प्रार्थना के स्वीकार होने की कम आशा करता हूँ और उसके निर्णय पर उस से ज़्यादा ख़ुशी के साथ जो दुआ के क़बूल होने में होती है राज़ी हो जाता हूँ क्योंकि ख़ुदा तआला की मर्ज़ी पर राज़ी रहने के फल और बरकतें इस से बहुत ज़्यादा हैं।''

(मलफ़ूज़ात भाग-1, पृष्ठ-460)

मानवजाति से सहानुभूति

''हमारा यह सिद्धान्त है कि सम्पूर्ण मानव-जाति से सहानुभूति करो। यदि एक व्यक्ति अपने पड़ोसी हिन्दू को देखता है कि उस के घर में आग लग गई और यह नहीं उठता कि आग बुझाने में सहायता करे तो मैं सच-सच कहता हूँ कि वह मुझ से नहीं है। यदि एक व्यक्ति हमारे मुरीदों (अनुयायियों) में से देखता है कि एक ईसाई को कोई क़त्ल करता है और वह उसके छुड़ाने के लिए सहायता नहीं करता तो मैं तुम्हें बिल्कुल सच कहता हूँ कि वह हम में से नहीं है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-12, सिराज-ए-मुनीर, पृष्ठ-28)

''मैं समस्त मुसलमानों और ईसाइयों और हिन्दुओं और आर्यों

पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि संसार में मेरा कोई शत्रु नहीं है। मैं मानव-समाज से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसे एक दयालु माँ अपने बच्चों से अपितु उससे बढ़कर। मैं केवल उन मिथ्या आस्थाओं का शत्रु हूँ, जिनसे सत्यता का हनन होता है। मनुष्य की सहानुभूति मेरा कर्तव्य है और झूठा और शिर्क (ईश्वर को छोड़ कर सृष्टि की उपासना करना) और अत्याचार तथा प्रत्येक दुराचरण अन्याय और दुष्टता से विमुखता मेरा सिद्धान्त।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-17, अरबईन भाग-1, पृष्ठ-344)

फ़रिश्ते (ईशदूत)

''पवित्र क़ुर्आन पर गहरी दृष्टि डालने और गंभीर चिन्तन करने से विदित होता है कि मनुष्य अपितु ब्रह्माण्ड की सम्पूर्ण सृष्टि की आन्तरिक एंव बाह्य शिक्षा और दीक्षा के लिए कुछ साधनों का होना आवश्यक है। पवित्र क़ुर्आन के कतिपय संकेतों से ज्ञात होता है कि कुछ वे पवित्र आत्माएँ जिनको फरिश्तों की संज्ञा दी गई है उनके आकाशीय संबंध पृथक्-पृथक् हैं। कुछ अपने विशिष्ट प्रभावों से वायु के चलाने वाले और कुछ जल बरसाने वाले और कुछ अन्य प्रभावों को पृथ्वी पर उतारने वाले हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, तौज़ीह मराम, पृष्ठ-70)

"यह भी याद रखना चाहिए कि इस्लामी शरीअत के अनुसार फरिश्तों की विशेषताओं का स्थान मनुष्य की विशेषताओं से कुछ अधिक नहीं अपितु मनुष्य की विशेषताएँ फरिश्तों की विशेषताओं से श्रेष्ठ हैं, अत: भौतिक विधान या आध्यात्मिक विधान में उनका माध्यम ठहरना उनकी श्रेष्ठता सिद्ध नहीं करता अपितु पवित्र क़ुर्आन के आदेशानुसार वे

सेवकों की भाँति इस काम में लगाए गए हैं।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, तौज़ीह मराम, पृष्ठ-74)

''फरिश्तों का उतरना क्या अर्थ रखता है! इसलिए स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला का विधान इस ढ़ंग पर चल रहा है कि जब कोई रसूल या नबी या मोहद्दस मानव-समाज के सुधार के लिए आसमान से उतरता है (अर्थात् किसी पैग़म्बर या अवतार या महापुरुष का संसार के सुधार के लिए प्रादुर्भाव होता है) तो अवश्य ही उसके साथ चलने वाले ऐसे फ़रिश्ते उतरा करते हैं जो जिज्ञासु हृदयों में हिदायत डालते हैं और सत्कर्मों की प्रेरणा देते हैं और निरन्तर उतरते रहते हैं जब तक कि कुफ्र और गुमराही का अन्धकार दूर होकर ईमान और सच्चाई की रौशनी प्रकट न होने लगे। जैसा कि अल्लाह तआला फर्माता है-

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ - سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ

(अल क़द्र - 5,6)

(अर्थात् (प्रत्येक प्रकार के) फ़रिश्ते और कामिल रूह (रूहुलक़ुदूस) उस रात में अपने रब के आदेश से सारे (भौतिक और आध्यात्मिक) मामले लेकर उतरते हैं फिर फरिश्तों के उतरने के बाद तो सलामती (ही सलामती) होती है। यह अवस्था प्रात:काल उदय होने तक रहती है)

अत: फरिश्तों और रूहुलक़ुदूस (पवित्र आत्मा) का आसमान से उतरना उसी समय होता है जब एक महान अध्यात्मिक महापुरुष ख़ुदा कि और से ख़िलाफ़त का सम्मान धारण कर और उसकी वाणी से सम्मानित होकर धरती पर अवतरित होता है। पवित्र आत्मा अर्थात् रूहुलक़ुदूस विशेष रूप से उस को मिलती है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-3, फतह इस्लाम हाशिया, पृष्ठ-12)

याजूज माजूज और उसकी वास्तविकता

''मसीह मौऊद का याजूज माजूज के समय में आना ज़रूरी है। 'अजीज' आग को कहते हैं जिससे याजूज माजूज का शब्द बना है (अत:) याजूज माजूज वह क़ौम है जो समस्त क़ौमों से अधिक संसार में आग से काम लेने में कुशल अपितु उस काम की आविष्कारक है। इन नामों में यह संकेत है कि उनके जहाज़, उनकी रेल-गाड़िया, उनकी मशीनें और कल-कारखाने आग के द्वारा चलेंगे और उनके युद्ध आग के द्वारा होंगे और वे लोग अग्नि से काम लेने की कला में संसार की समस्त जातियों में सर्वोपरि होंगे और इसी कारण से वे याजूज माजूज कहलाएँगे, अतएव वे यूरोप की कौमें हैं जो अग्नि के उद्योगों में ऐसी छाई हुई हैं कि इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने की विशेष आवश्यकता नहीं। पहली पुस्तकों में भी जो बनी इस्राईल की कौमों को दी गईं यूरोप की क़ौमों को ही याजूज माजूज ठहराया गया है। अपितु मास्को का नाम भी लिखा है, जो प्राचीन काल में रूस की राजधानी था। अत: निश्चित हो चुका था कि मसीह मौऊद याजूज माजूज के समय में प्रकट होगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-14, अय्यामुसुलह पृष्ठ-424,425)

नूर (प्रकाश) की ऋतु

''जैसा कि तुम देखते हो कि फल अपने समय पर आते हैं, ऐसा ही प्रकाश भी अपने समय पर ही उतरता है और इससे पूर्व कि वह स्वयं उतरे कोई उसको उतार नहीं सकता एवं जब वह उतरे तो कोई उसको बन्द नहीं कर सकता। किन्तु ज़रूर है कि झगड़े हों और विरोध हो, किन्तु अन्तत: सत्य की विजय है क्योंकि यह कार्य मनुष्य का नहीं

है और न किसी मानव सन्तान के हाथों से अपितु उस ख़ुदा की तरफ़ से है जो ॠतुओं को बदलता और समयों को फेरता और दिन से रात और रात से दिन निकालता है। वह अन्धकार को भी पैदा करता है किन्तु चाहता रौशनी को है। वह शिर्क (ईश्वर के अतिरिक्त अन्य देवी देवताओ को ईश्वर के बराबर स्थान दे कर उनकी उपासना करना) को भी फैलने देता है किन्तु प्यार उसका 'तौहीद' से ही है और नहीं चाहता कि उसका प्रताप दूसरे को दिया जाए। जब से कि मनुष्य पैदा हुआ है (और) उस वक्त तक कि वह नष्ट हो जाए-ख़ुदा का प्राकृतिक विधान यही है कि वह तौहीद का सदैव समर्थन करता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-15, मसीह हिन्दुस्तान में, पृष्ठ-65)

ऐ ख़ुदा! ऐ कारसाज़ो! ऐब पोशो किर दिगार,
ऐ मेरे प्यारे! मेरे मोहसिन!! मेरे परवरदिगार।
यह सरासर फ़ज़्लो एहसाँ है कि मैं आया पसन्द,
वरना दरगह में तेरी कुछ कम न थे ख़िदमतगुज़ार।
दोस्ती का दम जो भरते थे वे सब दुश्मन हुए,
पर न छोड़ा साथ तूने अए मेरे हाजत बरार!
ऐ मेरे यारे यगाना! ऐ मेरी जाँ की पनाह!
बस है तू मेरे लिए मुझको नहीं तुझ बिन बकार!
मैं तो मर कर ख़ाक होता गर न होता तेरा लुत्फ़,
फिर ख़ुदा जाने कहाँ यह फ़ेंक दी जाती ग़ुबार!
ऐ फ़िदा हो तेरी राह में मेरा जिस्मो जानो, दिल,
मैं नहीं पाता कि तुझ सा कोई करता हो प्यार।
इब्तिदा से तेरे ही साया में मेरे दिन कटे,
गोद में तेरी रहा मैं मिस्ल तिफ्ल-ए-शीर ख़्वार।

नस्ल इन्साँ में नहीं देखी वफ़ा जो तुझ में है,
तेरे बिन देखा नहीं कोई भी यार-ए-ग़म गुसार।
लोग कहते हैं कि नालायक़ नहीं होता क़बूल,
मैं तो नालायक़ भी होकर पा गया दरगह में बार।
इस क़दर मुझ पर हुईं तेरी इनायतो करम,
जिनका मुश्किल है कि ता रोज़-ए-क़यामत हो शुमार।
(रूहानी ख़ज़ायन भाग-21, बराहीन-ए-अहमदिया भाग-5, पृष्ठ-127)

★ ★ ★